दर्द की परछाइयाँ

चन्दन बाला जैन

दर्द की परछाइयाँ

चन्दन बाला जैन

दर्द की परछाईयाँ — **कवयित्री चन्दन बाला जैन**
(काव्य संग्रह)

प्रकाशन : श्री जय कुमार जैन, रिटायर्ड बी.डी.ओ.

प्रथम संस्करण : 2001

मूल्य : 135/-
: 75/- पेपर बैक

आवरण : ओमप्रकाश काद्यान

मुद्रक : राधेकृष्णा ऑफसैट प्रैस
कटला रामलीला, हिसार फोन : 37233

Dard Ki Parchhaiyan **By Chandan Bala Jain**
(A Collection of Hindi Poetry)

Publisher : Jai Kumar Jain, Retired B.D.O.

First Published : 2001

Price : 135/-
: 75/-

Titled by : O.P. Kadyan

Printed by : RADHEY KRISHNA OFFSET PRESS
Katla Ramlila, Hisar Ph. : 37233

समर्पण

पूज्य दादा श्री न्यामत सिंह जैन

पिता श्री राज कुमार जैन

माताजी श्रीमती रामदुलारी

तथा

मेरी अन्तरंग सखी

श्रीमती शान्ति तायल

की पुण्य स्मृति को

सादर सप्रेम समर्पित।

— चन्दन बाला जैन

मंगल कामना

श्रीमती चन्दन बाला जी के परिवार से मेरा घनिष्ठ परिचय रहा है। इनके दादा जी और पिता श्री दोनों, युग के अनुरूप लेखक रहे हैं। यह आवश्यक नहीं कि यह गुण हर किसी को विरासत में मिले पर चन्दन बाला जी में यह बीज पनपा और फलाफूला। उसी का परिणाम है उनका यह संग्रह "दर्द की परछाइयाँ"।

यह नाम बड़ा सार्थक है क्योंकि दर्द सहने की यातना में से गुज़रे बिना कोई साहित्यकार नहीं हो सकता। इनकी रचनाओं में कहीं नारी का दर्द साकार हुआ है जैसे श्रमिका, विधवा, मेरा नाम कहीं खो गया, नारी की विडम्बना, नारी के अनेक रूप तो कहीं श्रमिक और साधारण जन का।

पीड़ा दुख भी देती है तो पवित्र भी करती है। उनकी रचनाओं में विशेषकर ग़ज़लों में वही भावना प्रतिबिम्बित हुई है। ग़ज़लों में प्यार की महक है तो शिकवा शिकायत भी है।

कवयित्री यह भी नहीं भूलती कि आनन्द और उल्लास भी तो जीवन की चाहत है–

1. प्यार की है प्यास सबको, प्यार बांटों प्यार से
प्यार बीजो प्यार पाओ, प्यार की मनुहार से।

2. ज़ुबा से प्यार के जज़बात, बतलाए नहीं जाते
स्वयं समझे तो जाते हैं, समझाए नहीं जाते।

3. महसूस ही नहीं की, दिल ने कभी महोब्बत,
रस्में निभाई हमने, मेहन्दी रचा–रचा के।

ये रचनाएं जितनी सहज हैं उतनी ही अर्थ गर्भित भी। विचार हैं तो प्रेरणा भी है। इसलिए उनका यह प्रथम संग्रह उनके उज्ज्वल भविष्य का स्पष्ट संकेत देता है। मेरी हार्दिक शुभकामनाएं चन्दन बाला जी को।

— विष्णु प्रभाकर

दो शब्द

श्रीमती चन्दन बाला को कविता एवं संगीत पारिवारिक धरोहर के रूप में मिले। उनके दादा श्री न्यामत सिंह जी जैन समाज के प्रसिद्ध नाटककार तथा कवि थे। पुत्र राजकुमार जी ने भी यशस्वी पिता का अनुसरण किया, किन्तु आत्मप्रचार से सदा दूर रह कर। पड़ोस में रहने के कारण मेरा उनसे निकट परिचय था। चन्दन बाला ने भी वंश–परम्परागत संस्कारों के कारण काव्य–रचना में रूचि लेनी आरम्भ की। उनके मधुर क़ंठ ने सोने पर सुहागे का काम किया। छन्दशास्त्र एवं संगीत शास्त्र का विधिवत् प्रशिक्षण न लेने पर भी उनके भजन–गीत जनसभाओं में लोकप्रिय होने लगे। धीरे–धीरे उनके जीवन के खट्टे–मीठे अनुभव स्वयमेव कविता का रूप धारण करते चले गए और छन्द–सम्बन्धी दोष भी उनकी मधुर स्वर–लहरी में छुप गए।

श्रीमती चन्दन बाला की कविता में सहजता एवं सरलता है। मन में जब भी कोई भाव तरंग उमड़ी, वह अपने आप गीत या गज़ल में ढल गई। "दर्द की परछाइयां" वास्तव में कवयित्री के संवेदनशील हृदय का ही दर्पण है। मैंने कविता को "पीड़ा की सन्तान" कहा है।

फूल कांटों में मुस्कराता है,
प्रेम का आंसुओं से नाता है।
चोट से तार झनझनाते हैं,
दर्द कविता का जन्मदाता है।।

उनके भावुक मन की छटपटाहट अपनी और समाज की परिस्थिति–जन्य पीड़ा ही उनकी रचनाओं में प्रतिबिम्बित हुई है। कहीं आक्रोश है तो कहीं निराशा, कहीं नारी जीवन की विसंगति और विषमता की चुभन है तो कहीं आस्था की सुगन्ध एवं उत्सव का वातावरण। भाषा, छन्द और काव्यकला की बारीकियों की चिन्ता किए बिना उन्होंने अपने मनोवेगों को गीतों, गज़लों और मुक्तछन्द की विचार प्रधान कविताओं में पूरी ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त किया है।

मुझे पूर्ण आशा है कि श्रीमती चन्दन बाला के प्रथम संग्रह "दर्द की परछाइयाँ" का सहृदय पाठक हार्दिक स्वागत करेंगे।

'हंस विहार', लाजपत नगर, हिसार — **उदय भानु हंस**, राज्यकवि हरियाणा

अभिमत

श्रीमती चंदनबाला का नाम हिसार नगर की साहित्यिक गतिविधियों में बरसों से जाना–पहचाना जा रहा है। अपने मधुर कंठ से कविता एवं संगीत की जिस संगति की संरचना वे करती हैं, वह उन्हें एक अलग पहचान देती है। उनके गीतों एवं गज़लों में गेयता प्रमुख तत्व है। उनकी रचनाओं की विशिष्टता है उनकी सीधी–सरल संवेदनात्मक अभिव्यक्ति। एक संवेदनशील नारी–मन उनकी हर रचना में उपस्थित है। आज के समय की विसंगतियों से रूबरू होते वक्त भी वे उस रागात्मकता से अलग नहीं होती, जो गीत कविता का प्राण तत्व है। उम्र भर की अनुभूतियों–अनुभवों से समृद्ध उनकी विविधवर्णी कविताओं से परिचय सुधी पाठक को निश्चय ही रूचेगा। एक सहज रसानुभूति, एक आत्मीय अंतरंग स्वर इस संग्रह की लगभग सभी कविताओं में मौजूद है। सुश्री चंदनबाला के इस संकलन से हरियाणा, विशेष रूप से हिसार के साहित्यिक परिवेश को नई आस्था मिले, यही मेरी हार्दिक कामना है।

— कुमार रवीन्द्र, क्षितिज 310, अर्बन एस्टेट–।।, हिसार–125005

— — — — —

कवयित्री चन्दन बाला जी हिसार की एक ऐसी शख्शियत हैं, जिन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर हरियाणा स्तर पर ख्याति अर्जित की है। सामाजिक सरोकारों से जुड़ी उनकी रचनाएं, उनकी मार्मिक एवं प्रभुविष्णु संवेदनशीलता का परिचय देती हैं। वेदनामुखी भावयित्री प्रतिभा ने उनकी अनुभूतियों को सघन बनाया है, साथ ही सहृदय कविता प्रेमियों के अन्तर्मन को छुआ है।

हां, यह अवश्य है कि उनकी कवयित्री प्रतिभा को परिस्कृत एवं प्रौढ़ होने में अभी समय तथा अभ्यास की अपेक्षा है। उनके कोकिल कंठ से निकली दर्दीली अभिव्यक्तियां, मन को मथती हुई, बहुत कुछ सोचने और सोच को क्रियान्वित करने की प्रेरणा देती हैं।

चन्दन बाला जी के प्रथम काव्य संग्रह के प्रकाशन पर उन्हें मेरी सारस्वत शुभकामनाएं।

— डॉ. राधेश्याम शुक्लः, सी.आर.एम. जाट स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हिसार

— — — — —

'दर्द की परछाइयां' श्रीमती चन्दनबाला जैन का प्रकाशित होने वाला प्रथम काव्य–संग्रह है, जिसमें उनके गीत, गजलें, दोहे, छन्दमुक्त कविताएं आदि संगृहीत हैं। दर्द से कवयित्री का निकट रिश्ता रहा है। इसी कारण उनकी अनुभूतियों में गहराई है तथा अभिव्यक्ति में स्वाभाविकता। अनेक रचनाएं आपकी भावप्रवणता के कारण, मर्मस्पर्शी बन पड़ी हैं। प्रथम काव्य–संग्रह के प्रकाशन पर कवयित्री श्रीमती चन्दन बाला को हार्दिक बधाई।

— डॉ. रामनिवास 'मानव'

अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, सी.आर.एम. जाट कॉलेज, हिसार (हरि.)

— — — — —

मेरी अन्तरंग सखी चन्दन बाला का कविता संग्रह "दर्द की परछाइयाँ" नाम से छप रहा है, मेरे लिए यह एक सुखद सूचना है। पीड़ा जो प्रायः हर नारी की नियति है, काव्य रचना के लिए प्रेरणा बन जाती है, उदाहरण है "दर्द की परछाइयाँ"।

डॉ. राजकुमारी निशा

साहिबाबाद उत्तरप्रदेश **एम.ए.पी.एच.डी.**

मेरी दिवंगत शांति की बचपन की सहेली श्रीमती चन्दनबाला जैन से मेरा परिचय लगभग ४० वर्ष पूर्व कांगड़ा में हुआ था। इनके पतिदेव श्री जैन पंजाब में सरकारी अफसर थे और वहां पर कार्यरत थे। जैसा सुंदर शांत छोटा सा हिल स्टेशन कांगड़ा था, वैसे ही युवा दम्पति थे हंसमुख और कविता से कोमल, प्रकृति भी इनके सान्निध्य से खिल उठती थी। उनसे मिल कर लगता था संसार सुखों का भंडार है।

यही मेरा प्रथम परिचय था आज की जानी–मानी कवयित्री से। मुझे उस समय पता न था कि इस नारी ह्रदय में कितनी करूणा, कितनी संवदना छिपी है। न जाने कब यह कविता के रूप में निकल पड़ी, सुरीला कंठ और सुन्दर शब्दों में बंधे रस और छन्द प्रणय गीत में उभर जाते हैं। कभी गुजरात के भुकम्प की त्रासदी तो कभी भूख से मरते भारतवासियों की पीड़ा इनको झकझोर जाती है और फूट पड़ता है आर्तनाद।

बधाई है चन्दन जी को जिनकी कविताएं अब पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो कर पाठकों को मिल पाएंगी।

— बलदेव तायल, हिसार

— — — — —

चन्दन बाला जैन की कविताएं मिठास और सपनों से आप्लावित है। एक–एक कविता में भावों की गहनता और गहन जिजीविषा।

चन्दन की कविताओं में काव्यमयता एवं छंदबद्धता की अनूठी महक है, जो पाठक को संसार की विद्रूपता से उठाकर फूल, जुगनू और सितारों की दुनियां में ले जाती है।

ये कविताएं बोझिल नहीं हैं। इनकी रंगत ऐसी है जैसे दही के ऊपर छिटका हुआ जीरा हो। कहीं–कहीं कविताएं झकझोरती भी हैं। यह ज़रुरी भी था क्योंकि चन्दन एक विचारशील महिला हैं। उनका यह प्रथम प्रयास अनेक संभावनाओं से परिपूरित है।

— डॉ० शमीम शर्मा,

प्राचार्या, फ़तहचन्द महिला महाविद्यालय, हिसार (हरि.)

— — — — —

चन्दन बाला जैन एक ऐसी कवयित्री हैं जिन्हें काव्य–प्रतिभा विरासत में मिली है। इनके दादा जी श्री न्यामत सिंह जैन प्रसिद्ध जैन कवि थे। अपने समय में जिनका काव्य के क्षेत्र में डंका बजता था और जो श्रेष्ठ आशुकवि भी थे। इनके पिता श्री भी अच्छे कवि थे जिन्होंने इनके दादा जी के स्वर्गवास के समय बची हुई उनकी अधूरी रचनाओं को भी पूर्ण किया और अपनी कृत्तियों की भी रचना की। मैंने इस काव्य पुस्तिका की सभी रचनाओं को पढ़ा है। मुझे आश्चर्य हुआ कि श्रीमती चन्दनबाला जैन ने गज़लों में उर्दू की इतनी अच्छी काव्य रचना प्रस्तुत की है। इनकी हिन्दी की रचनाएं गीतिकाव्य को समृद्ध करेंगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

— डॉ. हिम्मत सिंह जैन

सेवानिवृत रजिस्ट्रार, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनू (राज.)

नव सहस्त्राब्दी में मेरी बड़ी बहन श्रीमती चन्दन बाला जी का काव्य संग्रह "दर्द की परछाइयाँ" प्रकाशित होने जा रहा है, जानकर अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव कर रही हूं। हरियाणा की उदीयमान कवयित्री में भविष्य में सृजित किए जाने वाले श्रेष्ठ काव्यों के अंकुर, विकसित होकर समाज को सत्यं शिवं सुन्दरं का संदेश देंगे।

मेरा विश्वास है कि बहन जी का प्रेरणादायक एवं कोमल भावनाओं से ओत प्रोत यह काव्य संग्रह, पाठक–हृदय को प्रभावित करेगा।

मैं उनको अपनी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करती हूं।

— **प्रो. स्वतंत्र भटनागर,** अध्यक्षा हिन्दी विभाग,
इन्दिरा गांधी राजकीय महाविद्यालय, टोहाना (हरियाणा)

— — — — —

बहन चन्दनबाला एक संवेदनशील रचनाकार हैं। काव्य गोष्ठियों में अपने मधुर कंठ से जब वे अपनी रचना प्रस्तुत करती हैं तो सहज ही ऐसा लगता है कि ये संवेदना के स्वर इनके हृदय की वेदना को अंकित करते हैं। चन्दन जी का जीवन संघर्षशील रहा है। इसलिए इनके सभी गीत व गज़लें भावपूर्ण हैं और मन को छूने वाली व प्रभावशाली हैं।

चन्दनबाला जी के दादा बा. न्यामत सिंह जैन, अपने समय के जाने–माने नाटक शिल्पी थे। उन्होंने जैन कथानकों पर आधारित अनेक नाटकों की रचना की। इस प्रकार इनका परिवार ही साहित्यिक गतिविधियों से जुड़ा रहा है। चन्दन जी के काव्य संग्रह के प्रकाशन पर उन्हें हार्दिक बधाई एवं भविष्य की शुभकामना।

— **जय कुमार जैन,** ४१, छबीलदास स्ट्रीट, हिसार

— — — — —

मेरी बड़ी बहन श्रीमती चन्दन बाला जी का काव्य संग्रह "दर्द की परछाइयाँ" अपने शीर्षक को सार्थक करता है।

इनकी रचनाएँ समष्टिगत व्यथा की व्यष्टिगत अभिव्यक्ति है।

इन्हीं के शब्दों में :–

हरजन की पीड़ा बनी मेरे उर की पीर,
कागज़ पर अंकित हुई दुनिया की तस्वीर।।

निःसन्देह इनका यह काव्य संग्रह हमारे परिवार का गौरव बढ़ाएगा।

871, सैक्टर 13, हिसार — **महेन्द्र कुमार जैन** (पी.एन.बी.) सेवानिवृत

— — — — —

मेरी बड़ी बहन श्रीमती चन्दन बाला गायन और लेखन में बचपन से ही रूचि लेती रही है। आज उनकी भावनाएं कविता–संग्रह के रूप में प्रकाशित हो रही हैं। उनका सपना साकार हो गया है। बहन जी को मेरी हार्दिक बधाई।

श्रीमती राज बाला बिन्दल
69, अशोका पार्क, मेन दिल्ली–35 एम.ए. (हिन्दी, इतिहास) बी.एड.

कुछ अपनी ओर से

मैने जैसे–जैसे होश सम्भाला, मेरे दादा जी स्वर्गीय न्यामत सिंह जी जैन की लिखी 30–35 पुस्तकों की चर्चा घर में सुनती रहती थी। माता जी तो सस्वर गाकर बड़ी रूचि से हमें सुनाती थी। 20 पुस्तकें तो उनके जीवन काल में ही प्रकाशित हो चुकी थी, जो भारत की हर जैन लायब्रेरी में उपलब्ध ा थी। उनके सभी नाटक आज तक भी विशेष अवसरों पर मंदिरों में मंचित होते रहते हैं, उनमें से कुछ नाम उल्लेखनीय हैं – मैना सुन्दरी नाटक, कमल श्री नाटक, विजया सुन्दरी आदि। सभी काव्य शैली में रचे गए थे। दादा जी के समान पिता जी को भी लिखने का शौक था। दादा जी के स्वर्गवास के बाद उनका एक अधूरा नाटक "विजया सुन्दरी नाटक" पिता जी ने ही पूरा किया। पिता जी ने भी दस नाटक लिखे, सभी काव्य शैली में ही थे। मेरे छोटे भाई महेन्द्र कुमार जैन में भी कविता लिखने के गुण दादा जी और पिता जी से ही आए हैं।

मुझे भी कविता लिखने की प्रेरणा दादा जी और पिता जी से मिली। आरम्भ में मैंने फिल्मी धुनों पर कुछ भजन लिखे जो मैं पिताजी को दिखाती और तीर्थों पर भी गाकर सुनाती थी, सब श्रोता बहुत पसंद करते थे। इससे मुझे लिखते रहने की प्रेरणा मिली। बाद में कुछ भजन पिता जी ने अपने लिखे 'सती चन्दन बाला नाटक" के पीछे छपवा दिये, उनमें से दो भजन इस संग्रह में भी दिये हैं। जो लगभग 1950 के आसपास लिखे थे।

1953 में आदर्श बाल विद्यालय में सीनियर अध्यापिका के रूप में कार्य किया। स्कूल की बाल पत्रिका का सम्पादन भी मुझे सौंपा गया।

1955 में प्रभाकर परीक्षा की तैयारी करते समय प्रो. उदयभानु जी हंस (जो उस समय गवर्नमैंट कॉलेज हिसार के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक थे) से मेरा सम्पर्क हुआ। वे हमारे पड़ौस में ही प्रसिद्ध साहित्यकार विष्णुप्रभाकर के मामा श्री प्यारेलाल गुप्ता जी के मकान में ही रहते थे। मेरे पिता जी भी उन दिनों नाटकों की रचना किया करते थे, तभी हंस जी का हमारे परिवार से घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित हो गया। प्रभाकर करने के बाद कविता लेखन में मेरी रुचि और भी बढ़ गई, क्योंकि प्रभाकर कोर्स में एक पुस्तक छंद अलंकार की भी थी, जो कविता आदि लिखने में सहायक थी।

सामान्य ज्ञान की जानकारियां इकट्ठा करने में मेरी रुचि बहुत थी, मैंने विचार किया क्यों न उनको एक पुस्तक का रूप ही दे दूं। तब मैंनें बहुत परिश्रम करके "विश्वदर्पण" नाम से, सामान्य ज्ञान की पुस्तक प्रकाशित की। उसकी भूमिका श्री उदयभानु हंस जी ने लिखी थी और भारत के प्रसिद्ध गीतकार नीरज एवं श्री रामावतार त्यागी उपसम्पादक नवभारत टाइम्स ने भी प्रशंसा के दो शब्द लिखे थे। पंजाब सरकार से मान्यता प्राप्त इस पुस्तक के तीन संस्करण 1960, 1966, 1967 में छपे।

1962 में विवाह होने के बाद मुझे अपनी सर्विस छोड़कर अपने पति के साथ, जहां भी बदली होती थी जाना होता था, नये लोगों से मिलना अच्छा लगता था। इस प्रकार 16 वर्षो तक हिसार से बाहर रहे। इन 16 वर्षों में खट्टे–मीठे जो भी अनुभव हुए और अब तक भी जो हो रहे हैं, वे शब्दों के रूप में ढलते रहे। हम दोनों पति–पत्नी को भारत–भ्रमण का भी बहुत शौक था। हमने भारत के कई प्रसिद्ध नगरों, पर्वतीय स्थानों तथा अनेक तीर्थों का भ्रमण किया।

1978 में हिसार वापिस आई। यहां के वातावरण में फिर से कविता लिखने का शौक बढ़ता देख हंस जी ने मुझे साहित्यिक गतिविधियों में जोड़ दिया। समय–समय पर वे मेरी काव्य रचनाओं को सुधारने–संवारने में सहयोग देते रहे तथा मेरी सस्वर कविता पाठ की शैली के कारण मुझे मंचों पर भी काव्य पाठ करने को प्रेरित किया। इस प्रकार साहित्यिक क्षेत्र के अतिरिक्त मेरा जीवन धार्मिक, सामाजिक कार्यों से पूर्णतया जुड़ गया।

इस बीच पारिवारिक समस्याओं से जूझने के साथ–साथ 1987 से जीवन में कई अत्यन्त दुखद घटनाओं का दौर शुरू हुआ जो 1995 तक चला। 1987 में माता जी का देहान्त हुआ जो मेरे लिए वज्रपात के समान था। 1993 में पिता जी का देहान्त, 1994 में बहन सरोज से चिर वियोग, 1994 में एकमात्र संतान राहुल का 22 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन। इन सब के कारण मैं असहाय पीड़ा से एकदम टूट गई। ऐसे घोर अन्धकार में मुझे साहित्यिक गतिविधियों ने ही व्यस्त तथा जीवित रखा।

मैंने आज तक जो भी लिखा, स्वान्तः सुखाय लिखा। उसे प्रकाशित करने के विचार से नहीं लिखा था। परन्तु कई वर्षो से मंचों पर निरन्तर पाठ करने से मुझे जो प्रोत्साहन मिला, विशेषरूप से श्रोताओं और सहयोगी कवियों व कवयित्रियों के द्वारा, काव्य संग्रह प्रकाशित करने की प्रेरणा मिली,

उसी के फलस्वरूप यह कृति आपके सामने हैं।

इस पुस्तक को आरम्भ से अन्त तक पूरा करने में मुझे हंस जी का पूरा–पूरा सहयोग न मिला होता तो यह पुस्तक कभी प्रकाशित नहीं हो पाती। उनका आभार प्रकट करने के लिए मेरे पास शब्द ही नहीं हैं। आज मेरी अंतरंग सखी शान्ति तायल याद आ रही है, वह मेरी प्रेरणा शक्ति थी। प्रसिद्ध साहित्यकार, समाजसेवी स्वर्गीय राजेन्द्र प्रसाद जी जैन जो मेरे अत्यन्त शुभचिन्तक, मार्गदर्शक तथा पिता के समान छत्रछाया रखने वाले थे, उनकी कमी खल रही है। मेरी बचपन की सहेली डॉ.राजकुमारी निशा की शुभकामनाएं सदा मेरे साथ रहती हैं। भूतपूर्व एम.एल.ए. श्रीमती स्नेहलता जी व श्रीमती कृष्णा भार्गव जी का प्यार और आशीर्वाद मुझे सदा मिलता रहा है। डॉ. शमीम शर्मा ने मुझे जब भी सहयोग की आवश्यकता पड़ी, उन्होंने तभी सहर्ष मेरा साथ दिया। वयोवृद्ध श्री महावीर प्रसाद जी एडवोकेट, पं. जगंत स्वरूप एडवोकेट, भैया बलदेव तायल, डॉ. लक्ष्मी नारायण सारस्वत, लेखक जयकुमार जैन, ये सभी मेरे आदरणीय, मेरे हितैषी रहे हैं। पत्रकार कमलेश भारतीय तथा श्रीमती आशा कुन्दन सभी पत्रकार मेरे लिए नीरक्षीर विवेकी रहे हैं, मैं उनकी अत्यन्त आभारी हूं।

इस काव्य संग्रह को सजाने संवारने में प्रसिद्ध गीतकार कुमार रविन्द्र, डॉ. हिम्मत सिंह जैन, डॉ. राधेश्याम शुक्ल, सबने सहयोग दिया। श्री रघुवीर अनाम, डॉ. रामनिवास मानव तथा अन्य प्रशंसकों ने इस संग्रह को प्रकाशित करने के लिए मुझे सदा प्रेरित किया। मैं इन सबका आभार प्रकट करती हूं।

मैं और किस–किस का नाम लूं। नगर के हर गणमान्य व्यक्ति, समाजसेवी, बुद्धिजीवी, धर्म–प्रेमी, कवि, कवयित्री, मित्र तथा सम्बन्धियों का स्नेह और शुभकामनाएं सदा मेरे साथ रही हैं। मैं इन सबका हृदय से आभार प्रकट करती हूं।
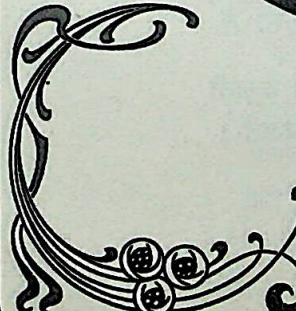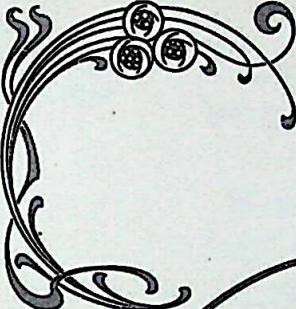
मेरे इस काव्य संग्रह के प्रकाशन में जिसने सबसे अधिक सहयोग दिया है वह हैं मेरे पति श्री जयकुमार जैन। उनके सहयोग के बिना ये पुस्तक इस रूप में कभी नहीं आती। मैं हृदय से उनकी भावनाओं का आदर व धन्यवाद करती हूं।

1661, ज्योतिपुरा, हिसार — चन्दन बाला जैन

अनुक्रम

गीत एवम् भजन

तिल–तिल करके नारी जलती,
जैसे मोम की बाती बलती।

सरस्वती वन्दना

हे शारदे तेरा ध्यान धरूं मां,
तेरे गुणों का गान करूं मां।

मेरे ह्वदय में तू ही बसी है,
होठों पे मेरे तू ही सजी है,
तेरी कृपा से भव से तरूं मां।
हे शारदे तेरा ध्यान धरू मां।

हे वीणा वादिनी, हंस वाहिनी
हे कमलासने, श्वेतधारिनी
प्रतिमा तेरी को मन में धरूं मां।
हे शारदे तेरा ध्यान धरू मां।

विद्या का वरदान मुझे दो,
बुद्धि–बल और ज्ञान मुझे दो,
तेरी कृपा से झोली भरूं मां।
हे शारदे तेरा ध्यान धरू मां।

तेरे लिए मेरे प्राण भी अर्पण,
तू ही मेरे मन का दर्पण,
तन–मन देकर तुझको वरूं मां।
हे शारदे तेरा ध्यान धरू मां।

झंकृत करदे इस जीवन को,
वीणा के तारों से मन को,
तेरी लय में खोई रहूं मां।
हे शारदे तेरा ध्यान धरू मां।

--**--**--

जीवन इक वीणा है

मानव जीवन इक वीणा है इसे बजाते रहना,
हर दिन मीठे, नये स्वरों से इसे सजाते रहना।

श्रद्धा–प्रेम से इसे बजाना, मीठी तानों से बहलाना,
मधुर स्वरों में शब्द संजोकर, सबके मन को तुम सरसाना,
जीवन मधुमय हो जाएगा, इसे सुनाते रहना।

तारों को तुम अधिक न कसना, ढीला भी मत उन्हें छोड़ना,
तुम अपने जीवन की गति को, सदा समय के साथ मोड़ना,
जीवन सुखमय हो जाएगा, रस बरसाते रहना।

जीवन जीना एक कला है, जीवन तो है एक साधना,
सुर संगीत के ही तारों से, मन को भी है तुम्हें बांधना,
प्रेम–भाव से तन्मय होकर, ध्यान लगाते रहना।

कोमल और कठोर सुरों से, सुख–दुख के अवसर भी आते,
केवल कुशल कलाविद ही, जीवन को संगीत बनाते,
जीवन समरस हो जायेगा, ताल मिलाते रहना।

जीवन की यात्रा में प्रायः, धूप छांव के क्षण आएंगे,
फूल अगर ललचाएंगे तो, कुछ कांटे भी उलझाएंगे,
मंज़िल को गर पाना है तो, कदम बढ़ाते रहना।

--**--**--

रोज़ शाम को दीप जलाकर

रोज़ शाम को दीप जलाकर, तुझे निहारा करती हूँ,
बाती की लौ में इकटक मैं, तेरा नज़ारा करती हँ।

विचलित होता जब मन मेरा, छंटता नहीं अंधेरा है,
ऐसे पल में घबराकर मैं, तुम्हें पुकारा करती हूँ।

तेरे कदमों की आहट को, दूर से लेती हूं पहचान,
ओढ़ ओढ़नी मैं आंचल को तुरन्त संवारा करती हूँ।

लिखती चिट्ठी कभी फाड़ती, आंसू कभी बहाती हूँ,
याद में तेरी सारा दिन मैं, यूँ ही गुज़ारा करती हूँ।

शाम का वादा किया था तुमने, दिनभर क्यों बैचेन रही,
तू क्या जाने तेरी जुदाई, कैसे गवारा करती हूँ।

चाहे ठंडी पड़े फुहारें, चाहे चंचल चले बयारें,
तन–मन को झुलसाती हैं ये, इनसे किनारा करती हूँ।

हाथ बढ़ा कर, मुझे अगर तुम, थामें नहीं रख सकते थे,
जीवन दूभर किया क्यूँ मेरा, यही विचारा करती हूँ।

--**--**--

प्रणय गीत

प्रियतम ! तुम्हें मैं अपना भरपूर प्यार दूंगी,
गर साथ चलो मेरे, जीवन संवार दूंगी।

जीवन–डगर में जब भी, रुक जाएंगे कहीं पर,
बैठेंगे दो घड़ी हम, लम्बे सफ़र से थक कर,
आंचल से अपने तुमको, शीतल बयार दूंगी।

उकता के जिंदगी से, क्यों हार मान बैठे ?
घबरा के हर लहर को, मंझधार बना बैठे,
पलकों से तेरे पथ के, कांटे बुहार दूंगी।

ऐसे लम्हें भी होंगे, तन्हा न कट सकेंगे,
उमड़ेंगे काले बादल, तो कैसे छट सकेंगे ?
तुम नाज़ तो उठाओ, तन–मन मैं वार दूंगी।

क्या सोचते हो रहते, ये तो ज़रा बताओ,
तुमसे नहीं हूँ दूर, आवाज़ तो लगाओ,
उजड़े हुए चमन को, हंसती बहार दूंगी।

--**--**--

मन का गीत

आज मन का गीत मैं तुमको सुनाऊँगी,
पास बैठो दो घड़ी मैं गुनगुनाऊँगी।

आओ घड़ियां सुख की जोड़ें अपने जीवन में,
याद करके उन क्षणों को मन रिझाऊँगी,
आज.........

प्राण में ऐसे बसे हो जैसे फूलों में सुगन्ध,
प्यार का पाकर परस मैं महक जाऊँगी,
आज.........

कौन देगा प्यार इतना, जो दिया मैंने तुझे,
हृदय तो मैं दे चुकी, अब जां लुटाऊँगी,
आज.........

देखकर तेरी उदासी मैं भी हो जाती उदास,
मुस्कराओगे तो मैं भी मुस्कराऊँगी,
आज.........

कौन जाने कह न पाऊँ बात अपनी फिर कभी,
आज मन की हर व्यथा, तुमको सुनाऊँगी, ..
आज.........

सांझ ढ़लती जा रही है, मन बुझा सा है,
नेह से ये दीप भरदो, जगमगाऊँगी,
आज.........

--**--**--

जुबां से प्यार के जज़बात

जुबां से प्यार के जज़बात, बतलाए नहीं जाते,
स्वयं समझे तो जाते हैं, ये समझाए नहीं जाते।

वे दिन अब याद आते हैं, दिये दिल से जलाते थे,
खुशी से नाचते गाते, ये घर सिर पर उठाते थे।
परन्तु आज सूनापन है कितना, देखो इस घर में,
उठी दीवारों से मस्तक तो टकराए नहीं जाते।

दुखी हो मन की बगिया तो सुमन उसमें खिले कैसे ?
रसीले स्नेह में कांटे चुभें तो मन मिले कैसे ?
करूं कैसे में स्वागत इन बहारों का ये बतलाओ ?
कभी सपने दिखाकर, मन बहलाए नहीं जाते।

खामोशी छा रही सब ओर, व्याकुल प्राण मेरे हैं,
दिये तो जल रहे हैं किन्तु अंतस में अंधेरे है,
कहां से लाऊं मैं खुशियां, मुझे कोई तो बतलाए,
पिया बिन प्यार के ये प्रश्न सुलझाए नहीं जाते।

इधर है रात भी काली, खुशी से दिल अधर खाली,
करूं कैसे भला पूजन, सजाऊं किस तरह थाली,
मन तो गया है दूर कहीं, मंगल मनाऊं कैसे,
बुझे मन से खुशी के गीत तो गाए नहीं जाते।

--**--**--

कौन सुनेगा कोलाहल में

कौन सुनेगा कोलाहल में, तप्त ह्रदय की आहट को,
दुनियां तो पत्थर दिल है, वह क्या जाने अकुलाहट को।

करता अत्याचार धनी है, भूखे सूखे निर्धन पर,
जितनी विनय करे उतनी ही, चोट पड़े नंगे तन पर,
देख रही मैं हर शोषित के अन्तर की कड़वाहट को।

पूंजीपति हैं रक्त चूसते बूंद–बूंद मजदूरों का,
कब होगा अब अन्त लालची दुष्ट निर्दयी क्रूरों का,
देख रही जीवित लाशों की करुणामय तड़पाहट को।

पिता का पहरा, मां का डर, बिगड़ा बेटा, पति का बंधन,
होता रहा ह्रदय में क्रन्दन, नरक बना सारा जीवन,
देख रही हूं घुटनभरी मैं नारी की घबराहट को।

कितनी सेवा करे मगर, मिलता कोई सम्मान नहीं,
उसके भी अरमान हैं कितने, देता कोई ध्यान नहीं,
देख रही हूं प्रतिक्षण मैं अब नारी की झुंझलाहट को।

बाधाओं से लड़ना सीखो, आगे–आगे बढ़ना सीखो,
मिट जाएंगे सभी अंधेरे, खुद पे भरोसा करना सीखो,
देखेगा फिर से जग सारा, तेरी भी मुस्कराहट को।

--**--**--

दिल की बात

आज दिल की बात सारी, क्या मैं दुनियां को बता दूं ?
दर्द ही मेरी कहानी, खोल कर कैसे सुना दूं ?

आस्थाएं आज सारी हो रही हैं मटियामेट,
झूठ सच को कह रहा है, मेरे सम्मुख घुटने टेक,
यह जगत का कड़वा सच है, मैं इसे कैसे भुला दूं,
आज.......

प्यार का इज़हार करना भी तो है कितना कठिन,
वो भी कुछ ज़ाहिर करें, तो मन न हो मेरा मलिन,
मैं छिपा लूं दिल का दुख या चीरकर उनको दिखा दूं,
आज.......

टूट जाते प्यार के धागे बिना विश्वास के,
चूर सारे स्वप्न हो जाते बिना उल्लास के,
आस का सुन्दर महल, क्या आंसुओं में ही बहादूं ?
आज.......

जग के बंधन में बंधा है, मेरा यह दुर्बल सा मन,
कैसे जाऊं भूल सहसा, मैंने देखा जो सपन,
भावना को दूं कुचल या सोई पीड़ा को जगा दूं,
आज.......

--**--**--

ऐसी क्या बात है

ऐसी क्या बात है चलती हूं अभी चलती हूं,
अपने जीवन के ज़रा फर्ज़ निभालूं तो चलूं।

मैंने देखे है यहां भूखे बिलखते बच्चे,
रोग से दर्द से दिन–रात तड़पते बच्चे,
दीन–दुखियों के अभी कष्ट मिटालूं तो चलूं,
ऐसी क्या बात है............

तुमने देखा है कभी कलियों को शरमाते हुए ?
अपने यौवन में खिले फूलों को मुरझाते हुए ?
रोग दहेज का अब जड़ से मिटालूं तो चलूं,
ऐसी क्या बात है............

देखा है हाथ कभी बूढ़ों को फैलाते हुए ?
बेटों के सामने मां बाप को घिघियाते हुए ?
उनकी मैं खोई प्रतिष्ठा को बचालूं तो चलूं,
ऐसी क्या बात है............

ईर्ष्या और द्वेष की ज्वाला में झुलसते हैं लोग,
रात दिन भोग रहे अपनी ही करनी का भोग,
सीधे रस्ते पे तनिक उनको लगालूं तो चलूं,
ऐसी क्या बात है............

मेरे गीतों से मैं सबका ही मन बहलाऊं,
दीन दुखियों की करूं सेवा, सदा ही सुख पाऊं,
पीर संसार की थोड़ी सी मिटालूं तो चलूं,
ऐसी क्या बात है............

--**--**--

तिल-तिल करके नारी जलती

तिल-तिल करके नारी जलती,
जैसे मोम की बाती बलती।

औरों को देती उजियारा,
अपना तन-मन जलाके सारा,
फिर भी उफ़ तक नहीं वो करती।

कोमल तन है, कोमन मन है,
करती वह दुख सभी सहन है,
कभी नहीं वह आहें भरती।

पर की इच्छा में जीती है,
विष के घूंट सदा पीती है,
घुटती रहती कुछ ना कहती।

इसका काम है सेवा करना,
कुल-कुटुम्ब का पोषण करना,
हर प्राणी के दुख को हरती।

नारी है ममता की मूरत,
लगती है देवी की सूरत
इससे धन्य हुई है धरती।

--**--**--

शान्ति का राग सुनाओ

शान्ति का राग सुनाओ तो कोई बात बने,
प्यार का साज़ बजाओ तो कोई बात बने।

धरती यह स्वर्ग है, दीवारें न खींचो इस पर,
द्वार भी कभी बनाओ, तो कोई बात बने।

रक्त की नदी बहाकर, न विजय पर फूलो तुम,
जीत के दिल को दिखाओ, तो कोई बात बने।

युद्ध से होता, समस्या का समाधान नहीं,
शत्रु को गले लगाओ, तो कोई बात बने

आपसी फूट से तो, देश बनेगा निर्बल,
एकता गीत सुनाओ, तो कोई बात बने।

--**--**--

गीत प्रेम के गाते जाएँ

गीत प्रेम के गाते जाएं, घृणा का नहीं सवाल हो,
हँसी खुशी से जीवन बीते, हर प्राणी खुशहाल हो।

मिलजुल कर सब काम करें हम, सुख दुख में सब साथ रहें,
पर की पीड़ा अपनी मानें, हंसते–हंसते दर्द सहें,
जिनके घर है अन्धकार अब, उनके लिए मशाल हो।

बैर–शत्रुता करना छोड़ें, स्वार्थ भावना से मुंह मोड़ें,
यह मानव परिवार एक है, सबसे ऐसा नाता जोड़ें,
सीधा सरल ही जीना सीखें, कभी न टेढ़ी चाल हो।

रंग भिन्न है, शक्ल अलग है, रहने के भी ठौर अनेक,
पर मनुष्यता तो समान है, और ख़ून का रंग भी एक,
जात–पात ना, धर्म कर्म में, भेद भाव का ख्याल हो।

दीन–दुखी को गले लगाएं, उनपर करुणा रस बरसाएं,
जिनका सब कुछ हाय लुट गया, उनको मिलकर धीर बंधाएं,
खुशियां बांटें आनंद बांटें, सबका ह्रदय विशाल हो।

--**--**--

होली खुशियों का त्योहार

होली खुशियों का त्यौहार, सखी री मस्ती का त्यौहार,
होली रंगों का त्यौहार, सखी री, उमंगों का त्यौहार।

सभी चाव से खेलें होली, रंग डालकर करें ठिठोली,
नाचे ग़ाएं ढोल बजाएं, मिलजुल कर आनन्द मनाएं,
फागुन का आ गया महीना, सब पर चढ़ा खुमार।

ठंडी–ठंडी हवा चली है, सबके मन की कली खिली है,
बच्चे बूढ़े सभी जवान, सबके चेहरों पर मुस्कान,
पिचकारी भर–भर के मारें, हर्षित हैं नर–नार।

कोई खेले ढोल बजाकर, कोई बृज वृन्दावन जाकर,
कोई खेले राधा के संग, कोई रंगा है कान्हा के रंग,
प्रीत–लहर में तन मन भीगा, रस की उड़े फुहार।

गोकुल के छोरे हैं चंचल, कर देते सब ओर हैं हलचल,
कर करके वो बातें भोली, रंग देते सब लहंगा चोली,
मैं भी तो हूं प्रेम दीवानी, हो जाती बलिहार।

ऊंच नीच का भेद मिटाओ, दीन दुखी को गले लगाओ,
प्रेम प्यार का रंग जमाओ, सबके दिल में खुशी जगाओ,
ऐसी खेलो सबसे होली, सुखमय हो संसार।

अपना देश है रंग बिरंगा, झंडा सबका एक तिरंगा,
हँसी खुशी के फूल खिले हैं, प्रेम प्यार से ह्रदय मिले हैं,
एक सूत्र में सबको पिरोकर, गूंथ लो सुन्दर हार।

--**--**--

वासन्ती गीत

कलियों पर यौवन छाया,
देख देख भंवरा भरमाया,
प्रेम भरे दिन आए चार, करलो प्यार........

वीणा ले सरस्वती आई,
दिव्य ज्ञान का अमृत लाई,
उससे भरलो सब भंडार, करलो प्यार.........

धानी साड़ी पहन के धरती,
है ऋतुराज का स्वागत करती,
झूम उठा सारा संसार, करलो प्यार.........

फूल खिले सरसों के पीले,
घर में हैं पकवान रसीले,
है सब ओर बसंत बहार, करलो प्यार.........

राग बसंती के दिन आए,
कामदेव सब पर हैं छाए,
प्रकृति करे सोलह श्रृंगार, करलो प्यार.........

आया है ऋतुओं का राजा,
वातावरण हुआ है ताजा,
मन में उठी, उमंग हज़ार, करलो प्यार.........

खेतों में छाई हरियाली,
झूम रही है डाली–डाली,
मन्द मन्द चल रही बयार, करलो प्यार.........

भंवरे छेड़ करें फूलों से,
चूम रहे मुख वे कलियों के,
सब पर मस्ती चढ़ी अपार, करलो प्यार.........

ओ पुरवैया बिन साजन के

ओ पुरवैया बिन साजन के, कैसे पर्व मनाऊंगी,
कहदे उनसे फागुन आया, मिलकर रंग उड़ाऊंगी।

उनकी प्रेमभरी वो बातें, याद मुझे अब आती हैं,
फागुन की ये मस्त हवाएं, छेड़–छेड़ कर जाती हैं,
साजन के बिन मन–मंदिर में, कैसे अलख जगाऊंगी।
ओ पुरवैया बिन साजन के।

रंग–बिरंगी मेरी चुनरिया, हवा में उड़ती जाती है,
छनक रही हैं मेरी चूड़ियां, पायल खुल–खुल जाती है,
साजन बिन श्रृंगार व्यर्थ है, कैसे रूप सजाऊंगी।
ओ पुरवैया बिन साजन के।

साजन जब घर आएंगे तो, चुपके से छिप जाऊंगी,
ढूंढेंगे जब इधर–उधर वो, मन ही मन मुस्काऊंगी,
आने दो मेरे साजन को, मैं उनको खूब छकाऊंगी।
ओ पुरवैया बिन साजन के।

--**--**--

होली पर्व मनाऊं कैसे ?

होली पर्व मनाऊं कैसे ?
दिल में उमंग जगाऊं कैसे ?

वातावरण तनाव भरा है,
हर इक दिल में घाव भरा है,
ईर्ष्या द्वेष मिटाऊं कैसे ?

धर्म–जाति दीवार बनी है,
घृणा–क्रोध की भृकुटि तनी है,
मन के भेद मिटाऊं कैसे ?

चेहरों के रंग उड़े हुए हैं,
हृदय सभी के बुझे हुए हैं,
गीत फाग के गाऊं कैसे ?

सभी ओर हुंकारें भारी,
आतंकित है जनता सारी,
उसको धीर बंधाऊं कैसे ?

जिनके अरमां हो गए होली,
वो कैसे अब खेलेंगे होली,
उनको सुख लौटाऊं कैसे ?

बुरा समय आखिर बदलेगा,
संकट का भी सूर्य ढलेगा
यह मन को समझाऊं कैसे ?

--**--**--

बैसाखी

बैसाखी का आया त्यौहार, मिलके मनाएं खुशियां,
चले चंचल सी ठंडी बयार, मिलके मनाएं खुशियां।

फूलों पे भंवरे झूम रहे, कलियों के मुखड़े चूम रहे,
सुवासित हो रही सारी बगिया, मन में बहती प्यार की नदियाँ,
कैसा मोहक है मौसम बहार, मिलके मनाएं खुशियाँ।

खेतों में फसलें पक गई, दानों से बाली भर गई,
मुश्किल की घड़ियां कट गईं, आयी सलोनी ऋतु नई,
गेहूँ के भरो भंडार, मिलके मनाएं खुशियां।

धन धान्य से खलियान भरे हैं, कृषक देश की शान बने हैं,
जीवन का स्तर ऊंचा होगा, भविष्य सबका उज्ज्वल होगा,
सबका स्वप्न हुआ साकार, मिलके मनाएं खुशियां।

ऊंची सैंडलों नूतन कपड़े, इठलाती मेले में आए,
रूप अनोखा सम्भल न पाए, मस्त जवानी छलकी जाए,
सज धज के चली मुटियार, मिलके मनाएं खुशियां।

आ मेरे बेलिया आई बैसाखी, 'इश्क दी मस्ती' चढ़ गई साकी,
गिद्दा पाएं भंगड़ा पाएं, इक दूजे नूं गले लगाएं,
आज जिंदड़ी नूं अपनी संवार, मिलके मनाएं खुशियां

जाग उठा सबमें अहसास, जीने की जग गई प्यास,
पूरी होगी सबकी आस, कोई न होगा अब निराश,
सबके चेहरों पे आया निखार, मिलके मनाएं खुशियां।

--**--**--

अग्रोहा तीर्थ

हम नाम अग्रोहा का, हर दिल में बसा देंगे,
इसके कण–कण को हम, मोती से सजा देंगे।

ये धाम बना न्यारा, हर दिल को लगा प्यारा,
जो लोग यहां आते, आते हैं वो दोबारा,
आंखों में समा जाता, सुन्दर मधुबन सारा,
हम इसकी शोभा को, कई चांद लगा देंगे।

हमरे पुरखों की ये, अति पावन धरती है,
इसकी धूली हमको, नित प्रेरित करती है,
इसकी गौरव गाथा, कुछ याद दिलाती है,
शान और शौकत को, हम फिर से बना देंगे।

हे अग्रसेन महाराज, तुम देखो आकर आज,
था जहां तुम्हारा राज, वो तीर्थ बना है आज,
सब अग्रवंशियों को, इस धरती पर है नाज,
उजड़ी थी जो नगरी, हम फिर से बसा देंगे।

कितने समाजवादी थे, वे अग्रसेन महाराज,
नगरी में जो आता, वो ही करता था यहां राज
इक रुपया और इक ईंट, देता था सकल समाज,
उस रीत पुरानी को, हम फिर से चला देंगे।

लक्ष्मी और सरस्वती, मां शीला, दुर्गा मां,
मारुति खड़े हुए, छू रहे आकाश यहां,
विष्णु की झांकी है शक्ति सरोवर यहां,
क्या–क्या हम करें वर्णन, आओ तो दिखा देंगे।

मानव को मानव जान, व्यवहार करेंगे हम,
राजा हो चाहे प्रजा, नहीं भेद करेंगे हम,
सुख–दुख में मिलजुल कर, सब एक रहेंगे हम,
हर दिल में मोहब्बत की, हम शम्मा जला देंगे।

पंचम धाम

आओ दिखाएं पंचम धाम,
कहते जिसे अग्रोहा धाम।

केदारनाथ गंगोत्री देखी,
बद्रीनाथ, जमनोत्री देखी,
अब देखो अग्रोहा धाम,

ज्योति रथ ने सबको जगाया,
नगर–नगर संदेश सुनाया,
सभी चलो अग्रोहाधाम,

गगन चुम्बी बना है मंदिर,
मारुति खड़े हवा के अन्दर,
सभी देवताओं का है धाम,

अग्रवंशियों फिर से जागो,
चिर निद्रा को अब तुम त्यागो,
रखना अग्रवंश का नाम,

अग्रबंधुओं ने बनवाए,
मैडिकल कालेज और सराए,
शक्ति सरोवर ललित ललाम,

लक्ष्मी का वरदान मिला है,
जग में यश औ' मान मिला है,
करते रहना परहित काम,

अग्रसेन थे सम्यकवादी,
थी सुखी सम्पन्न आबादी,
इक मुद्रा–ईंट का था परिणाम

धामों में है धाम अग्रोहा,
जाग उठा है वैभव सोया,
अग्रोहा बना अग्रोहा धाम,

अग्रोहा जिसने नहीं देखा,
रह गया इक तीरथ अनदेखा,
देख ही लो ये सुन्दर धाम,

--**--**--

राही रे चलते रहना

बीच डगर नहीं रुकना है,
साथ समय के चलना है,
आगे आगे बढ़ना है,
राही रे चलते रहना।

समय कभी रुकता नहीं,
समय कभी झुकता नहीं,
समय कभी थकता नहीं,
राही रे चलते रहना।

चाल समय की तेज बहुत है,
कुछ भी गफलत कर मत जाना,
कष्टों से भी डर मत जाना,
राही रे चलते रहना।

रुक जाओगे, पछताओगे,
राहों में कहीं खो जाओगे,
हाथ नहीं कुछ भी पाओगे,
राही रे चलते रहना।

समय निकलता जाएगा,
लौट के फिर नहीं आएगा,
तू फिर पीछे पछताएगा,
राही रे चलते रहना।

समय को जिसने छोड़ दिया,
समय ने उसको तोड़ दिया,
जीवन का पथ मोड़ दिया,
राही रे चलते रहना।

समय को तुम बलवान समझना,
समय को तुम धनवान समझना,
सबसे समय महान समझना,
राही रे चलते रहना।

सही समय पर सही कदम,
जाकर लो मंजिल पर दम,
नहीं रहोगे किसी से कम,
राही रे चलते रहना।

समय बनाता–समय मिटाता,
होता वही, समय को भाता,
समय जगत का है निर्माता,
राही रे चलते रहना।

--**--**--

कोसानी के पंत

ये किसने उतारे, धरा पर सितारे,
चमकते हैं जंगल में, जुगनू से प्यारे।

पहाड़ों ने ओढ़ी है हरियाली चादर,
शिखर पर सुशोभित है बर्फीली झालर।
घटाएं टहलती हैं, जुल्फें संवारे,
ये किसने उतारे धरा पर सितारे।

ये ठंडी हवाएं, सभी को लुभाएं,
गगन में उमड़ती घुमड़ती घटाएं।
सभी ओर बिखरे हैं मोहक नजारे,
ये किसने उतारे धरा पर सितारे।

पहाड़ों के पीछे उगता है सूरज,
फिर घटाओं में दिखता है सूरज,
सभी देखते मानो है दूल्हा पधारे,
ये किसने उतारे धरा पर सितारे

कोसानी की भू ने किया पंत पैदा,
प्रकृति का पुजारी परम संत पैदा,
उसे कमाऊं का कण–कण पुकारे,
ये किसने उतारे धरा पर सितारे।

--**--**--

पुत्र राहुल की याद में

याद आएगी भला क्या, जब याद जाती ही नहीं,
स्वप्न में आए भी कैसे, नींद आती ही नहीं।

दिल को सकूं देती नहीं, मुझको किसी की बात भी,
जिक्र न हो जिसमें तेरा, वह बात भाती ही नहीं।

ऐसा बिछड़ा है तू मुझसे, कोई बिछड़े ना कभी,
देता था मुझको जो खुशी, वह भूल पाती ही नहीं।

वो तेरी मीठी हँसी, वो लिपटना प्यार से,
किसको लगाऊँ सीने से अब, यह सोच पाती ही नहीं।

तेरी तो हर अदा पर, मुझको आती थी हँसी
अब किसी भी बात पर, मुझको हंसी आती ही नहीं

गोद में आकर मेरे सीने से लग जाता था जब,
लोरियां देकर सुलाती, वो रात आती ही नहीं।

रूठना तेरा वो मेरा भी मनाना फिर तुझे,
वो लम्हें कैसे भुलादूं, भूल पाती ही नहीं।

मेरी उम्मीदों का अब अन्तिम दीया भी बुझ गया,
अब उजाले की किरण जीवन में आती ही नहीं।

--**--**--

हकीकत राय का बलिदान

हकीकत ने धर्म पर जान देकर नाम पाया है,
नहीं उसका कोई सानी, ऐसा कर दिखाया है।

ज़रा भी की नहीं परवाह, ना माता और पिता की भी,
धर्म के सामने उसको, नज़र कुछ भी न आया है।

तू बन जाय मुसलमां तो, तुझे हम माफ़ कर देंगे,
हकीकत ने मना करके, धर्म का ऋण चुकाया है।

हकीकत को हुआ मंजूर, सर अपना कटा लेना,
धर्म के सामने झुकना, हकीकत को ना आया है।

सभी ने खूब समझाया, हकीकत ने न इक मानी,
बना शासक भी निर्मोही, न खुदा का ख़ोफ खाया है।

दुआ मांगी रहम की भी, न पिघला काजी ना मुल्ला,
किया धड़ से अलग सिर को, ना इक पल भी लगाया है।

--**--**--

शहीद की मां

वीर पुत्र की जननी है तू, इस पर हमको है अभिमान,
भार रहेगा सिर पे हमारे, जब तक तन में हैं ये प्राण।

देश का ऊंचा किया है भाल,
देकर अपना प्यारा लाल,
धन सुविधा कितनी भी दे दो, पूर्ण न होगा पर नुकसान।

कितने कितने सपने होंगे,
कितनी जान गलाई होगी,
जीवन भर का घाव दे गया, तेरे बेटे का बलिदान।

मां इतना ही मैं कहती हूँ,
तूने बेटा एक दिया,
अबसे देश के सारे बेटों को हे माँ तू अपना जान।

मरना तो सबको इक दिन है,
देश हित मरना गर्व की बात,
सारा देश ऋणी है तेरा, उतर ना पाएगा अहसान।

नहीं भरेगी कभी ये खाई,
कभी न होगी अब भरपाई,
कितने भी तगमे मिल जाएं, पर थोड़ा है यह सम्मान।

--**--**--

गुरु वन्दना

गुरु की पूजा मैं करूं, ह्रदय में धर के ध्यान,
मेरे गुरु की कीर्ति, फैले चहूं दिशान।

गुरु ही मात, गुरु पिता, गुरु ही मित्र है,
गुरु ब्रह्म, विष्णु, महेश, गुरु शिव नेत्र है,
गुरु को नमन मैं करूं, मेरे गुरु महान।
गुरु की पूजा......

गुरु की छत्र छाया में, मेरा निवास हो,
गुरु की दृष्टि जब पड़े, भीतर प्रकाश हो,
गुरु से मिलता आत्मज्ञान, गुरु करे कल्याण।
गुरु की पूजा......

गुरु की संगत से ये जीवन, निखरता जाता है,
गुरु हो जिसके साथ में, उभरता जाता है,
ह्रदय में जिसके गुरु बसे, होता नहीं विरान।
गुरु की पूजा......

गुरु मार्ग दर्शक है, गुरु ही खेवनहार है,
गुरु को जो समर्पित है, नैया उसकी पार है,
गुरु में पूर्ण विश्वास रख, गुरु कृपा निधान।
गुरु की पूजा......

गुरु की संगत से है मिलता, आनन्द अपार है,
गुरु की शिक्षा भीतर उतरे, तो जीवन बहार है,
चिन्ता द्वन्द्व रोग उलझन, सबका गुरु निदान।
गुरु की पूजा......

गुरु के गौरव गरिमा की, कामना सदा करूं,
गुरु में श्रद्धा, प्रेम लगन, आस्था सदा रखूं,
गुरु भक्ति निष्काम करूं, गुरु ही देंगे ज्ञान।
गुरु की पूजा......

कष्टों को मत.....

कष्टों को मत बोझ मानना, रहना समता भाव में,
चलते रहना ही जीवन है, शूल चुभे चाहे पांव में।

पथरीले पथ भी आएंगे, दुख भी बहुत सताएंगे,
रोकेंगी विपरीत हवाएं, पर्वत भी टकराएंगे,
हिम्मत छोड़ न देना पगले, सुख के कभी अभाव में,
कष्टों को..........

कहीं क्रोध का दानव बैठा, कहीं लोभ की माया है,
विषय विकार की ज्वाला में, जलती कंचन काया है,
बैठे रहना तुम संतोष के, तरु की शीतल छांव में,
कष्टों को..........

पथ–पथ पर कितने आकर्षण, मन को भी भरमाएंगे,
कुछ बाधाएं आएंगी, कुछ रिश्ते भी उलझाएंगे,
रखना धैर्य किन्तु मन में, मत रहना कभी तनाव में,
कष्टों को..........

फूल, पेड़, पौधे, पत्ते, इन सबमें भी तो प्राण हैं,
भले भिन्न हो जाति धर्म, सब मानव एक समान हैं,
भूले से भी मत आना, दुनिया के कुटिल प्रभाव में,
कष्टों को..........

यह संसार दुखों का घर है, कह गए श्री महावीर हैं,
सुख की आशा व्यर्थ यहां पर, फिर क्यों हो रहा अधीर है
भव सागर तुम तर जाओगे, बैठ सत्य की नाव में,
कष्टों को..........

--**--**--

भजन

कन्हैया तुम्हें जग में आना पड़ेगा

कन्हैया तुम्हें जग में आना पड़ेगा,
वचन अपना तुमको निभाना पड़ेगा।

हदें पार करदी मनुष्य ने सारी,
तुम्हें चक्र फिर से चलाना पड़ेगा।

हुआ भाई के ख़ून का भाई प्यासा,
सही पथ पे मानव को लाना पड़ेगा।

विमुख हो गई धर्म से आज दुनिया,
तुम्हें ज्ञान गीता सुनाना पड़ेगा।

यहां लुट रही लाज है द्रौपदी की,
तुम्हें चीर आकर बढ़ाना पड़ेगा।

बहुत बढ़ गए आतताई जगत में,
पुनः कंस का नाश कराना पड़ेगा।

घड़ा पाप का भर गया है लबालब,
तुम्हें अब करिश्मा दिखाना पड़ेगा।

--**--**--

जय महावीरा स्वामी

जय महावीरा स्वामी – जय महावीरा,
नाम लेत जाया पीरा – जय महावीरा।

त्रिशला नन्दन–काटो भव फंदन,
करो धर्म उजियारा –जय महावीरा।
जय महावीरा स्वामी........

अपनी कृपा रखो हम पर तुम,
और ना कोई सहारा – जय महावीरा।
जय महावीरा स्वामी........

जब जब भीर पड़ी है हम पर,
नाम तेरा ही उचारा – जय महावीरा।
जय महावीरा स्वामी........

मिथ्या जगत ने हमको घेरा,
इससे दो छुटकारा – जय महावीरा।
जय महावीरा स्वामी........

भव सागर में नाव फंसी है,
हमें दिखाओ किनारा – जय महावीरा।
जय महावीरा स्वामी........

वीरा वीरा पुकारूं हर पल,
नाम तेरा है प्यारा – जय महावीरा।
जय महावीरा स्वामी........

--**--**--

भजन

तेरे चरणों में अरमानों की.....

तेरे चरणों में अरमानों की दुनिया लेके आई हूँ,
तुम्हारी दासी बनने की तमन्ना लेके आई हूँ।

लगी है आस चरणों से, प्रभु मुझ दीन दुखिया की,
करम बंधन छुड़ा दो अब, ये आशा लेके आई हूँ।

निगाह में दर्श–दिल में ध्यान, होठों पे तुम सिमरण,
ज़रा तो देखलो स्वामी, मैं क्या–क्या लेके आई हूँ।

लगा दो पार ये नैया, मेरी संसार–सागर से,
मैं दुनिया के दुखों का भार, सर पे लेके आई हूँ।

सिवा तेरे नहीं कोई नज़र आता है "बाला" को,
तेरे कदमों में रहने का, इरादा लेके आई हूँ।
(1950)

--**--**--

दहेज की मांग

ऐ लड़की वालों तुम इतना घबराया ना करो,
यों खौफ़ लड़केवालों का तुम खाया ना करो।

तुमको अगर है गर्ज़ तो, उनको भी गर्ज़ है,
बेकार अपनी दीनता दिखलाया ना करो।

इनकार करदो देने से, मांगे अगर पैसा,
घर लालची लोगों का तुम बसाया ना करो।

देने को कुछ भी दीजिए लड़की है तुम्हारी,
पर मांगने वालों को मुंह लगाया ना करो।

लड़की को शिक्षा दीजिए, शिक्षित बनाइये,
शादी में धन को व्यर्थ गंवाया ना करो।

मांगे अगर वो आपसे तो साफ कह डालो,
देखो जी धन पे ग़ैर के ललचाया ना करो।

जड़ से उखाड़ फेंक दो "बाला" दहेज को,
कहने में सच्ची बात के कतराया ना करो।

(1950)

--**--**--

ग़ज़लें
दोहे

मेरे साथ मेरी तरह,
रातभर दीया भी जलता रहा।

दर्द सबको ही सुनाएं...

दर्द सबको ही सुनाएं, ये ज़रूरी तो नहीं,
हर जगह हम मुस्कराएं, ये ज़रूरी तो नहीं

कारवां लेकर चले थे, हम सफर पर दोस्तो,
साथ आखिर तक निभाएं ये ज़रूरी तो नहीं।

बेवज़ह कोई रूठ कर, जाता है जाने दीजिए,
हम उसे जाकर मनाएं, ये ज़रूरी तो नहीं।

यूं तो शायर ने लिखी, होंगी हजारों पंक्तियां,
शेर सारे दाद पाएँ, ये ज़रूरी तो नहीं।

कर लिया सामान यूँ सौ साल जीने के लिए,
सबको खुशियां रास आएं, ये ज़रूरी तो नहीं।

--**--**--

बिखरे हुए हैं कांटे.......

बिखरे हुए हैं कांटे, कोई कमल तो हो,
वादे हैं सारे झूठे, कोई अमल तो हो।

खाली दिलासे लेकर, कब तक जिएगा कोई,
अपनी किसी भी बात पर, कोई अटल तो हो।

हसरत भरा ये दिल है, क्योंकर करूं बयां,
उनकी तरफ से आखिर, कोई पहल तो हो।

क्या है तड़प–तड़प कर, जीने से फायदा,
तुम इतना दर्द दे दो, कोई ग़ज़ल तो हो।

अब रह गई हैं हरसूं, केवल उदासियां,
मेरी व्यथा में आँख भी, कोई सजल तो हो।

--**--**--

दिलों के फासले.....

हम दिलों के फासले, अब दूर यूँ कर पाएंगे,
तंगेदिली को छोड़ जब, ताज़ा हवा में आएंगे।

कुछ धरा उठाएंगे तो, कुछ गगन झुकाएंगे,
इस तरह टूटे दिलों के, फिर से तार मिलाएंगे।

झोंपड़ी आगे बढ़े कुछ, महल भी पीछे चले,
भेद ऊंच और नीच का, हम इस तरह मिटाएंगे।

हर गरीब अमीर के है, खून में अन्तर नहीं,
हरेक मनुष्य के मन में, विवेक को जगाएंगे।

आज सारे विश्व में है, राग द्वेष पनप रहा,
मनुज मनुज में बनी, दीवार हम हटाएंगे।

हम घृणा को त्याग कर, अब प्रेम करना सीखलें,
अपने भारत वर्ष को, धरती का स्वर्ग बनाएंगे।

--**--**--

जान हो तुम या जिगर हो......

जान हो तुम या ज़िगर हो, फूल हो या माहताब,
कौन से रिश्ते से मिलते हो, बताओ तो, जनाब।

रातदिन मिलते हो तुम, कुछ तो वजह होगी ज़रूर,
किसलिए खामोश हो, हां दीजिए कुछ तो जवाब।

सोच कर रखना कदम, इस प्यार के संसार में,
सीखलो तुम कुछ तरीके, प्यार के पहले जनाब।

पूछते क्या हो मेरी तुम जिंदगी की दासतां,
धीरे धीरे पढ़ ही लोगे, मेरे दिल की तुम किताब।

कहने को तुम हमसफर हो, चल रहे पर बेखबर,
किसलिए पहने हुए हो, फिर मुहब्बत का नक़ाब।

क्यों किया वादा था तुमने, गर निभाना था नहीं,
रातें काटी जागकर हमने बहुत ही बेहिसाब।

तेरे कदमों का गुमां, होता है हर आवाज पर,
ढूंढती रहती निगाहें, फिर भी तुमको क्यों जनाब।

तुमको माना था खुदा, पर निकले पत्थर के सनम,
हम मुहब्बत के चमन में, थे फक़त कोमल गुलाब।

जानती हूँ तुम मसीहा हो, मेरे क़ातिल भी हो,
फिर मेरा दिल तोड़कर क्यों, कर दिया खाना ख़राब।

देखने को हँस रहे हैं, दिल मगर है रो रहा,
जिंदगी देने के बदले, जिंदगी कर दी ख़राब।

आहें, आंसू, दर्द, ग़म, गर जिन्दगी का नाम है,
मौत है इससे तो अच्छी, किस लिए देखूं मैं ख़्वाब।

अब तो जीना भी मानो.......

अब तो जीना भी मानो सज़ा हो गई,
सांस लेना भी अब तो कज़ा हो गई।

सच का दामन सभी ने है छोड़ा यहां,
झूठ धोखा ही अब इक गिज़ा हो गई।

आस हम तो बहारों की करते रहे,
पर अचानक ये कैसी फिज़ा हो गई।

हँस के ग़ैरों से बोले जहां हम कभी,
जिंदगी हम से इक दम ख़फा हो गई।

क्या भरोसा करें हम किसी पर कभी,
हर तरफ अब विषैली हवा हो गई।

उनसे शिकवा भी करके करें भी तो क्या,
अपनी किस्मत ही जब बेवफ़ा हो गई।

--**--**--

हमें छल रहा है.......

हमें छल रहा है ये कबसे ज़माना,
मुसीबत बना है यहां दिल लगाना।

कभी हम तो जीवन में हँसने न पाए,
नहीं कोई देखा है सपना सुहाना।

ये चाहा था दिल में तुम्हें हम बसा लें,
बनाया न तुमने ये दिल आशियाना।

चले जाएंगे एक दिन हम तो आख़िर,
बनाती रहेगी ये दुनिया फ़साना।

मुहब्बत का हमने न पीटा ढिंढोरा,
गया जान फिर भी ये कैसे ज़माना।

ज़माने में जो नाम लेते वफा का,
नहीं जानते वो वफा को निभाना।

--**--**--

अकेले-अकेले चले जा रहे हैं

अकेले–अकेले चले जा रहे हैं,
किनारे–किनारे बहे जा रहे हैं।

समझते थे जिनको भी हमदर्द अपना,
वही देखो हमको छले जा रहे हैं।

तमन्ना में फूलों की, शूलों से उलझे,
तुम्हारे लिए सब सहे जा रहे हैं।

जमाने ने जो घाव हमको दिये हैं,
उन्हें मौन रह कर सिये जा रहे हैं।

बसाया था दिल में उन्हें हसरतों से,
मगर खून दिल का पिए जा रहे हैं।

जो समझे न अब तक वो समझेंगे अब क्या,
उन्हें बस दुआएं दिए जा रहे हैं।

भरोसा मुहब्बत का देकर हमें वो,
सितम बेवज़ह क्यों किए जा रहे हैं।

न लो इम्तिहां तुम मेरे सब्र का अब,
कि हम सांस अंतिम लिए जा रहे हैं।

--**--**--

ये गीत बिना दर्द के

ये गीत बिना दर्द के, गाए नहीं जाते,
जख्मों के सब निशां, मिटाए नहीं जाते।

आए ना दिल के गुलशन में, जब तक कोई बहार,
गुलदानों में यूं फूल, सजाए नहीं जाते।

इस प्यार में न पूछो, है कितनी चोट खाई,
अब और दिल से सदमें, उठाए नहीं जाते।

किस आस में हम कैसे, जीते हैं ये न पूछो,
खुद हमसे अपने हाल, सुनाए नहीं जाते।

कुछ लोग पूछते हैं, मेरा ये दर्दे दिल,
हर शक्स को तो राज़, बताए नहीं जाते।

--**--**--

अपनी ज़िंदगी से......

मेरा अपनी जिंदगी से, है यही बस इक सवाल,
बाद मुद्दत के भी उनका क्यों नहीं भूला ख़्याल।

बाद मर जाने के मेरे, होश में आए तो क्या?
प्यार में देकर जुदाई, कर दिया जीना मुहाल।

साथ अर्थी के चलो तुम, कांधा कोई गैर दे,
ये मेरी तौहीन होगी, इतना है मेरा सवाल।

आख़िरी मेरा सफ़र है, आंख क्यों तेरी है नम,
ज़िंदगी भर गम दिए हैं, अब ये है कैसा मलाल।

तेरे मिलने से तो पहले, दर्द से वाकिफ न थे,
जब जरा वाकिफ हुए तो, हो गया जीना बवाल।

कद्र जीते जी ना की, तुमने तो मेरे प्यार की,
वरना दुनिया भी हमारे प्यार की देती मिसाल।

हम तरसते ही रहे, दीदार को तेरे सनम,
तुम जो होते साथ, तो फिर मौत भी होती निढाल।

--**--**--

हम कभी न अपने दिल को...

हम कभी न अपने दिल को बेकरार करेंगे,
भूल कर भी अब न उनका इंतजार करेंगे।

उनकी खुशनुमा वफा का भरम दूर हो गया,
अब किसी भी बात का न एतबार करेंगे।

पत्थर की तरह लोग हों, तो क्या रखें उम्मीद,
फ़िक्र छोड़ दूसरों की, ख़ुद से प्यार करेंगे।

टेढ़े मेढ़े रास्तों पे, चलके देख लिया है,
स्वयं ही अब, अपनी राह को हमवार करेंगे।

बार–बार वायदों का, हमें क्या सिला मिला,
अब नहीं, किसी से कोई भी करार करेंगे।

हमने सोचने का नज़रिया सारा बदल दिया,
अब तो कोई और ही ढंग इख़्तियार करेंगे।

--**--**--

जीवन में घूंट कड़वे.......

जीवन में घूंट कड़वे, कितने पिये हैं मैंने,
दरअसल सांस घुट–घुट कर, ही लिए हैं मैंने।

जितने भी जख़्म उसने, मुझको दिये हैं दिल पर,
ना जाने किस तरह से, वो सब सिये हैं मैंने।

हर लम्हा ही गमों में, डूबा रहा है मेरा,
कितनी ही मुश्किलों में, वो दिन जिए हैं मैंने।

अरमान जिंदगी के, दफना के अपने हाथों,
कुछ हौंसले शिकस्ता दिल को दिये हैं मैंने।

जब–जब भी तुम बहुत ही, आए हो याद मुझको,
रातों को जाग कर ही आंसू पिए हैं मैंने।

तंग आके बस तुम्हारी बेवजह बेरूखी से,
खुद ही सुनहरे सपने घायल किए हैं मैंने।

--**--**--

गाती हूं गीत क्यों मैं......

गाती हूं गीत क्यों मैं, फिर ऐसे बेवफा के,
लूटा है चैन जिसने, मुझको सता–सता के।

जीने भी नहीं देता, मरने भी नहीं देता,
चर्चे करूं कहां तक, दिलवर की इस अदा के।

करते रहे हैं दावा, वो मेरी जिंदगी पर,
छलते रहे हैं मुझको, रिश्ते बना–बना के।

महसूस ही नहीं की, दिल ने कभी मुहब्बत,
रस्में निभाई हमने मेहन्दी रचा–रचा के।

चाहा था तुमने खुद ही, मेरी जिन्दगी में आना,
आंखें चुरा ली तुमने, फिर क्यों नज़र मिलाके।

--**--**--

रहते हैं साथ-साथ.......

रहते हैं साथ–साथ पर पहचानते नहीं,
किस बात पर वो जायें रूठ जानते नहीं।

है रिश्ता भी अजीब ये, हम खुद ही कैद हैं,
बंधन को तोड़कर भी मुक्ति चाहते नहीं।

वो भी हैं वाक़िफ हो गए, आदत हमारी से,
कि हम तो उनकी बात का बुरा मानते नहीं।

है कट चुकी बहुत, कट बाकी भी जाएगी,
अपना भला बुरा मगर हम जांचते नहीं।

ग़म दे दिये हैं उसने, शिकायत भी क्या करें,
रहते हैं दूर–दूर फिर भी, हम भूलते नहीं।

--**--**--

जिंदगी कुछ कट गई...

जिंदगी कुछ कट गई है बाकी भी कट जाएगी,
किन्तु बीती जिन्दगी की न दास्तां मिट पाएगी।

जिनको भी था अपना समझा दर्द उसने ही दिया,
क्या करें हम उनसे शिकवा बात फिर बढ़ जाएगी।

कुछ पता चलता नहीं है, क्या किसी के दिल में है,
इक न इक दिन सामने सबकी कली खुल जाएगी।

कितने कच्चे थे वो धागे, जिनसे हम थे बंधे हुए,
क्या पता था यह इमारत पल में ही ढह जाएगी।

प्यार की राहों में दिल ने चोट खाई है बहुत,
घाव भरने पर निशानी तो सदा रह जाएगी।

हैं रंगे कितने ही दुश्मन, दोस्ती के रंग में,
हरकतें उनकी भी इक दिन, सामने आ जाएंगी।

--**--**--

तेरा बदन खुदा ने.......

तेरा बदन खुदा ने, कैसा है ये तराशा,
इक बार देखले जो, रहता सदा वो प्यासा।

है तू कहीं से निकले, हर आंख उधर ही जाती,
चल पड़ते लोग पीछे, बन जाता है तमाशा।

मयखाने में कोई भी, पीता नहीं है देखा,
आँखों से तेरी सबको, हो जाता है नशा सा।

आकाश पर घटाएं, जब काली काली छाती,
आती है याद मुझको, उस वक्त बेहताशा।

तेरा गुमां ही होता, आहट पर हर किसी की,
जाकर अगर मैं देखूँ, मिलती सदा निराशा।

रहने लगा है दिल भी, बीमार अब तो मेरा,
मुझको रही नहीं अब, जीने की कोई आशा।

--**--**--

जब भी तुझको.......

जब भी तुझको न पास पाया है,
दिल ने बिरहा का गीत गाया है।

दर्द हद से गुजर गया है अब,
साथ अश्कों ने ही निभाया है।

कौन तन्हाइयों में हो शामिल,
अपना साया ही जब पराया है।

जिसकी यादें सकून देती हैं,
उसके गम ने बहुत सताया है।

ग़म समेटे हुए हूं मैं इतने,
हाल पूछा तो दिल भर आया है।

वक्त की धूप से डरे वो क्यों ?
जिसके सिर पर खुदा का साया है।

--**--**--

कैसा जादू किया

तूने मुझ पर भला, कैसा जादू किया,
रात दिन का मेरा चैन ही हर लिया।

कुछ नहीं सूझता है, मुझे क्या करुं,
ऐसा खोया है कुछ जो नहीं मिल रहा।

तेरे बिन जो भी क्षण बीतता है मेरा,
यूं लगे व्यर्थ में ही समय खो दिया।

मैं तेरे पास हूं, जल में मछली हो ज्यों,
तुझसे बिछड़ी अगर, दिल तड़पता रहा।

तेरा दर्शन मुझे है, प्रभु का मिलन,
मिल गया मुझको सब कुछ जो तू मिल गया।

जब भी उठना पड़ा, तेरे दर से मुझे,
मैं संभल तो गई, मेरा दिल रो दिया।

तूने किस नाम की मय पिलाई मुझे,
अब ना उतरे कभी, चढ़ गया वो नशा।

मेरे गीतों में है एक मीठी तड़प,
उस तड़प में भी अब मिल रहा है मजा।

तेरी मुझपे है रहमत, ये चर्चा न हो,
जीने देगा न जग, चल गया जो पता।

तेरी नजरों में सचमुच है ऐसा असर,
जिसने देखा तुझे, वो तेरा हो गया।

आदमी ही आदमी से......

आदमी ही आदमी से मर रहा है,
अपने ही चेहरे से देखो डर रहा है।

जाना चाहे भी तो जाएंगे कहां हम,
अब नहीं कोई सुरक्षित दर रहा है।

जिन्दगी पानी का बस इक बुलबुला है,
फिर भी मानव मेरा–मेरा कर रहा है।

असली नकली की परख हो भी तो कैसे,
आदमी नित नये मुखड़े धर रहा है।

खून के रिश्तों में पानी मिल गया है,
आदमी अब और हल्का पड़ रहा है।

आजकल के आदमी का क्या भरोसा ?
रोज रावण बनके सीता हर रहा है।

दिल में कुछ है और जुबां कुछ और कहती,
आदमी हर वक्त धोखा कर रहा है।

--**--**--

मधुर ये समां है......

मधुर ये समां है, घोर छाई घटा है,
तेरा साथ पाने को, जी चाहता है।

बहुत सी हैं बातें, जो जी में हमारे,
तुम्हें सब सुनाने को, जी चाहता है।

अभी मुझसे लगते हो, कुछ–कुछ खफा से,
तुम्हें फिर मनाने को जी चाहता है।

हर इक बात पर, जो कसम खा रहे हो,
तुम्हें आजमाने को, जी चाहता है।

कोई पल भी मेरा गमी में न डूबे,
मेरा मुस्कराने को जी चाहता है।

नया दिन है आया, नई धुन सुनाओ,
गिले सब भुलाने को, जी चाहता है।

--**--**--

हर बुराई को विदाई.......

हर बुराई को विदाई, आज हम देते चलें,
हो उजाला हर दिशा में, दीप खुशियों के जलें।

गीत ग़जलों की फुहारें, रात दिन होती रहें,
दोस्तों की महफिलों में शमा भी जलती रहे।

भोर की पहली किरण से हृदय आलोकित करें,
और सूनी आंख में हम रंग सपनों का भ़रें।

आंख में आंसू किसी के हम नहीं देखें कभी,
हर दुखी दिल के लिए हम मीठी मुस्काने बनें।

प्यार की है प्यास सबको, प्यार बांटो प्यार से,
प्यार बीजो, प्यार पाओ, प्यार के मनुहार से।

कितनी भी बाधाएं आएं, हारें हिम्मत ना कभी,
धीरता गम्भीरता से अपनी मुश्किल हल करें।

जिंदगी तो बहता पानी है, उसे रोकें न हम,
हर तरफ छाई हों खुशियां दुख सभी का बांट लें।

कोई भी मतभेद आपस में अगर हो जाय तो,
गांठ मत बांधो कभी भी दूर सब शिकवे करें।

हर किसी के दर्द को संवेदना से थाम लें,
जब कभी कांटे चुभें तो फूल का नाम लें।

--**--**--

आजकल मंजिल मेरी.....

आजकल मंजिल मेरी करीबे मौत है,
ना कोई कश्मकश है ना कोई खौफ है।

सांस चलती है जब तक, मुझे जीना होगा,
वरना जिंदगी तो मानो, इक बोझ है।

कोई शै नहीं दे सकती खुशी मुझको,
गर जा सकूं कहीं, तो मौत की आगोश है।

न कोई चाह बाकी न कोई सुन्दर सपना,
न किसी हमदर्द की अब रही खोज है।

लुट रहा है सब मेरे जीते जी यहां,
सब समझते हैं यही, मुझे कहां होश है।

बेखबर चाहती हूं होना, इस मतलबी दुनियां से मैं
देख लिया है सबको मैंने, यह जग अहसां फरामोश है।

सुन मेरी बीमारी का, यूँ सोचकर बोले,
क्या कह सकते हैं, अभी मरने में कितने रोज़ हैं।

मेरे जीने का तो कोई सामां करता नहीं,
मरने की इंतजार बस करते लोग हैं।

कोई दवा, दुआ, दिल को बहलाते नहीं,
आते हैं केवल देखने, कितना इसका कोष है।

--**--**--

चाहते थे साथ बहना

चाहते थे साथ बहना, ज्यों नदी की धार बन,
किन्तु बन कर रह गए हम, दो किनारे आर–पार।

लहरों तुम क्यों दे रही, संदेश उनका आकर,
रहने दो अंजान मुझको, मत सताओ बार–बांर।

ऐ हवाओं महक उनकी, लाती क्यों हो मेरे पास,
और महक जाते हैं अरमां, रोएंगे फिर जार–जार।

ऐ घंटाओं बरसो मुझसे दूर जाकर तुम कहीं,
आंसुओं से ही है भीगा, मेरे मन का तार–तार।

चांद अपनी चांदनी छिटका रहा है मुझपे क्यूँ,
चूम रही शीतल किरण, ले जा उसे किसी और द्वार

--**--**--

एक का महत्व

सरोकार तुमको नहीं, अनपढ़ कितने लोग,
एक पढ़ादे एक को, मिटे अविद्या रोग।

सरोकार तुमको नहीं, कितने पीड़ित लोग,
पीर हरो गर एक की, मिटे दर्द का योग।

सरोकार तुमको नहीं, कितने जग असहाय
एक योग दे एक को, सबको मिले सहाय।

सरोकार तुमको नहीं, भूखे लोग अनेक,
एक सम्भालो एक को, भूखा रहे न एक।

सरोकार तुमको नहीं, कितने बेघर लोग
एक रूपैया ईंट दे, हो घर का संजोग।

किस–किस का करते रहे, मत सोचो ये बात,
करे एक जो एक का, कटे कष्ट की रात

सब अपना–अपना करें, कौन बड़ी ये बात,
परहित की सोचें सभी, होय न दुख की बात।

सावन की बरसात में, तन मन भीगा जाय,
ऐसे में मेरे पिया, तेरी याद सताय।

छेड़ रही सखियां हमें, लेकर तेरा नाम,

मन ही मन मुस्का रहीं, अब तो आजा श्याम।

एक बार तो यूं लगे, चढ़ा विरह का ताप,
बूंद पड़े जब देह पर, पुलकित होता गात।

सावन आया मदभरा, उमड़ पड़ा उल्लास,
मन बेकाबू हो गया, पिया मिलन की आस।

नारी के अनेक रूप

बहना रस की गागरी, छलकत छलकत जाय,
पीहर से पाती मिले, नैना भर–भर आय।

नारी सूरत त्याग की, सहती कष्ट अनेक,
अपना सब कुछ वार के, रखती घर की टेक।

नारी एक पहेलिका, बूझ सका ना कोय,
इसकी गहराई तलक, पहुंच सका ना कोय।

बेटी गऊ समान है, किसी खूंट दो बांध,
अन्तर में घुटती रहे, चुप्पी मन में साध।

मां के आंचल के तले, जाते सब दुख भूल,
दुनिया की चिन्ता मिटे, कष्ट ना लागे मूल।

भनक अभावों की न दे, शोभा अधिक लगाय,
जोड़ तोड़ के साथ ही, घर को रही चलाय।

लज्जा गहना नार का, लज्जा ही अभिशाप,
लज्जा के कारण सदा, अनुचित झेले ताप।

बेटी लेती है जनम, जाने को वह दूर,
यह तो चलन समाज का, सब ही हैं मजबूर।

भाभी घर में काम कर, सबका मन बहलाय,
ऊंच नीच हो जाय कुछ, कभी न बख्शी जाय।

बहू मूरती लाज की, सबसे ही सकुचाय,
फूंक फूंक रखती कदम, सबसे ही भय खाय।

पीहर की ठंडी हवा, सदा बहे दिन–रात,
पाती पा दिल खिल उठे, भले न होवे बात।

पिता छत्र छाया रखे, अभय रहे परिवार,
जीवन रूपी नाव की, थाम रखे पतवार।

बेटा कुल का दीप है, उजियारे की आस,
हो सपूत तो स्वर्ग है, हो कपूत तो नाश।

पिता सकल परिवार को, पाल रहा बिन ताप,
पर बेटे मिलकर सभी, बांट रहे मां–बाप।

लड़की ही है लक्ष्मी, सदा रहे वह साथ,
हर दुख सुख में आपके, सदा बटावे हाथ।

नारी तो हर हाल में, अपने को ले ढाल,
इस गुण के कारण सदा, लेती कुटुम सम्भाल।

एक पहेली नार है, बूझ सका ना कोय,
इसे समझना है कठिन, व्यर्थ समय मत खोय।

दूध धुला कोई नहीं, सबमें कुछ है दोष,
स्वयं दोष दिखते नहीं, मिलता है संतोष।

बोले तो बड़ बोली है, न बोले तो अज्ञान,
रखते चड़बाजी पुरुष, इसको नारी जान।

पत्नी सदा दुआ करे, सुखी रहे परिवार,
पत्नी के सिर पर पति, रहता सदा सवार।

एक पिता की आय में, पले सकल परिवार,
बेटे पेट न भर सके, सौ–सौ ताने मार।

कुल्टा निर्लज बोलकर, करें सभी बदनाम,
किसने उसे विवश किया, उसका तो लो नाम।

नारी को ठगता रहा, सब्ज़ दिखाकर बाग,
पुरुष सदा डसता रहा, बन कर काला नाग।

कुल्टा वेश्या बोलकर, मढ़ा दोष सिर नार,
अपने में भी झांक ले, तुम हो जिम्मेदार।

जीवन में कठिनाइयां, आती रहीं अनेक,
पड़ी झेलनी सब मुझे, दिल पर पत्थर टेक।

चाह रहे कुछ और थे, मिला हमें कुछ और,
झेल रहे हैं आज तक, कहां मिलेगा ठौर।
किसी विधा में भी लिखूं, होती तेरी बात,
कभी मूल पाती नहीं, दिन हो या हो रात।

सभी केकड़े है यहां, खींच रहे हैं टांग,
बोल बेतुके बोलते, पिये द्वेष की भांग।

दुनिया सीधे सरल की, नहीं पूछती बात,
बढ़चढ़ कर जो बोलता, पा जाता सौगात।

हम जब चिल्लाते रहे, नहीं दिया तब ध्यान,
खुद पर जब आ पड़ी तो, हुआ कष्ट का भान।

खुद तो कुछ करता नहीं, करता नहीं सुहाय,
देख दूसरों की बढ़त, तुझसे सही न जाय।

भरते को सब भर रहे, भूखे को ना देत,
अभाव में जो पल रहा, उसकी सुध ना लेत।

बिगुल बजेगा मौत का, आएगा यमराज,
जाना होगा एक दम, सकल छोड़के काज।

अपनी बीबी छोड़कर, देखे पर की ओर,
क्यों ललचाता रे मना, पाप लगे है घोर।

देखे ऐसे लोग भी, जतन करें दिन रात,
भाग्य साथ देता नहीं, मिले नहीं सौगात।

बराबर का घर देखिये, लड़की पाए मान,
ऊंचा घर जो देखता, फंसी रहे है जान।

कोई मरा पड़ौस में, कौन बड़ी है बात,
मरना था वह मर गया, हमको क्या आघात।

बेईमानी फल रही, कहते हैं ये लोग,
ये उसका प्रारब्ध है, जिसे रहा वह भोग।

भला काम तो बिन कहे, सबको ही दिख जाय,
क्यों ढिंढोरा पीटते, कहने से घट जाय।

पैसे से सब कुछ मिले, प्रेम न मिलने पाय,
यह तो दिल की बात है, कौन कहां मिट जाय।

बोल बोल कर थक गए, कलह नहीं घट पाय,
ख़ामोशी का दान दो, आग वहीं बुझ जाय।

यूं तो अवसर प्यार के, जीवन में थे आए,
पाप पुण्य के प्रश्न में, हम तो उल्झे पाए।

सबसे पहले ये खबर, मरे सैंकड़ों लोग,
पढ़कर पृष्ठ उलट दिया, कौन मनाए सोग।

मिले नहीं हर एक को, सुख अपने अनुकूल,
कर्मों का फल भोगते, क्यों जाता तू भूल।

नहीं सुरक्षित घर कोई, कहो कहां हम जायं
बारूदी इस ढेर पर, बैठे सब असहाय

वृद्धों की सेवा करो, पाओगे आशीष,
पूजा उनकी कीजिए, घर में है जगदीश।

संत अगर मिल जाय तो, पूछो ज्ञान की बात,
मत पूछो तुम कुल कुटुम, मत पूछो तुम जात।

समय आ गया तर्क का, तर्क हमारा मीत,
चाहे लाख गुनाह हो, तर्क से जाता जीत।

दिल तो तेरे पास है, मन मेरा अकुलाय,
जिस पथ से मैं चल पड़ूं, घर तेरा आजाय।

मोर नाचता बाग़ में, चिड़ियां गाए गीत,
मन मेरा व्याकुल भया, आजा मेरे मीत।

पैसा, पदवी, पुत्र सब, यही पड़े रह जाय,
एक प्रभु का नाम ही, जीवन पार लगाय।

कुशल–कुशल सब पूछते, बाकी रहा न कोय,
काल समय जब आ गया, बचा सका ना कोय।

घुंघट की क्या बात है, सिर भी ढ़का न जाय,
बोझे बनी है ओढ़नी, आंचल दिया हटाय।

मानव को मानव समझ, बात करे हर कोय,
ऊंच नीच की भीत को, खड़ी करे ना कोय।

मूरत पत्थर की सदा, पूज रहा इन्सान,
पभु की सिरजी मूर्ति पर, नहीं किसी का ध्यान।

हर जन की पीड़ा बनी, मेरे उर की पीर,
कागज पर अंकित हुई, दुनिया की तस्वीर।

हर जुबान है कह रही, शत्रु बनी औलाद,
सिर पर चढ़ कर बोलती, किसे करें फरियाद।

जब तक हैं संसार में, टी.वी. औ अखबार,
अमन नहीं होगा कभी, करिये जतन हज़ार।

हवा चल पड़ी पश्चिमी, यौवन बहका जाय,
कदम यहां तक बढ़ गए, लौट के अब न आय।

पैसा जब था पास में, सब करते थे बात,
पैसा पास नहीं रहा, छोड़ गए सब साथ।

श्रमिक बनाता महल है, रहने को ना ठौर,
रहता कोई और है, काम करे कोई और।

कहना चाहा जब कभी, कह ना पाई बात,
शब्द मौन सब हो गए, आंखों से बरसात।

क्या लिखूं क्या छोड़ दूं, कुछ भी लिखा न जाय,
कौन बात पहले लिखूं, उलझा मन भरमाय।

जहां रूप रस गंध है, तब तक भंवरा आय,
सूखी नदिया में नहीं, कोई कभी नहाय।

सच शायद कड़वा लगे, मुझे यही आभास,
देश रात दिन जा रहा, बनने को फिर दास।

शादी रास आ जाय तो, जीवन स्वर्ग समान,
वरना सारी जिंदगी, जलती ज्यूं शमशान।

मन पे लगती चोट जब, सहती हूँ चुपचाप,
मन भी सह ना पाय जब, कविता बनती आप।

लेने वाला कर्ज तो, आता है इक बार,
देने वाला काटता, चक्कर कई हज़ार।

पल भर में दुख से सभी जाते हैं घबराय,
हमें हो गई झेलते, सारी उम्र ही हाय।

--**--**--

कविताएं

मन का दीप जलाऊं कैसे

देश मुक्त हो गया....

देश मुक्त हो गया, मुक्त हम हुए नहीं,
विश्व प्रेमभाव से युक्त हम हुए नहीं।
स्वप्न देखते थे हम, सुप्रभात आएगा,
कब लहू ग़रीब का, राम राज्य लाएगा।
कल्पना के बाग़ में, कब बहार आएगी,
भूख से जो रो रहे, कब उन्हें हँसाएगी।
आज मन उदास है, भूख है न प्यास है,
हो रहा विनाश है, आदमी निराश है।
अन्धकार छा रहा, रौशनी सिमट रही,
छल कपट के हाथ से, है सच्चाई पिट रही।
हो रहा, बुरा है हाल, बाढ़ है कहीं अकाल,
भ्रष्ट राजनीति भी, चल रही है टेढ़ी चाल।
हर दिशा से आजकल, उठ रहे कई सवाल,
कब उड़ेगा व्योम में, नये भविष्य का गुलाल।
कृषक वर्ग की व्यथा, श्रमिक वर्ग की कथा,
कर्ज साहूकार का, प्रश्न रोज़गार का।
अनाचार हो रहा, हर अनाथ रो रहा,
सिर पे बोझ ढो रहा, अब तो धैर्य खो रहा।
सह सकेंगे कब तलक, घाव पर पड़ा नमक,
कैसे पहुंच पाएगा, देश अपने लक्ष्य तक।
नारियों की पीर को, लोचनों के नीर को,
संकटों के तीर को, दर्द की लकीर को।
फर्क ऊंच नीच का, कब मिटेगा विश्व से,
भ्रष्टाचार का तमस, कब हटेगा विश्व से।
निर्धनों की कामना, शोषितों की भावना,
इस कठोर सत्य का, कब करेगा सामना।
आओ सभी प्रण करें, कष्ट देश का हरें,
मां का ऋण उतार दें, उसपे प्राण वार दें।
जन सभी सुखी रहें, रोग हो न कष्ट हो,
हर मनुष्य के ह्रदय से, राग द्वेष नष्ट हो।
धर्म प्रांत भिन्न हों, पर ह्रदय हो एकसा,
मन घृणा से दूर हो, राष्ट्र में हो एकता।

फूल की अकाल मृत्यु

देख मेरे रंग रूप यौवन को तू क्यों ललचाता प्राणी,
मुझको भी जीने दे, मेरी दो दिन की है जिंदगानी।

निज रक्षा की खातिर, मैंने शूलों को स्वीकार किया,
पत्तों रूपी चादर में छिपना भी अंगीकार किया।

धूप–छांव और गर्मी–सर्दी वर्षा हो या हो आंधी,
एक डाल पर साथ रहेंगे, डोर प्रेम की बांधी।

झूम रहा था, नाच रहा था, परिवार में फलफूल रहा था,
प्रियजनों के दुख–सुख में ही, सब कुछ मैं तो भूल रहा था।

अपने छोटे से जीवन को, रंगों से नहलाया मैंने,
भांति–भांति की सुगंध से, उपवन को महकाया मैंने।

कभी–कभी स्वछंद हवा में जब अपना सिर करता ऊपर,
तभी कुदृष्टि चपल मानव की, पड़ती मेरे कोमल तन पर।

तोड़ क्रूर मानव ने मुझको, आस पे पानी फेर दिया,
पांखुड़ी–पांखुड़ी करके मेरी, मुझको यों ही बिखेर दिया।

कहीं पांव से रौंदा भू पर, कहीं हाथों से मसल दिया,
बच्चों की छीना–झपटी ने, जीवन मेरा कुचल दिया।

सुबह सवेरे मेरी अस्थियां, कूड़ा बन थीं पड़ी हुई,
देख मौत अपने अस्तित्व की, हृदय में वेदना बड़ी हुई।

लोग मेरे प्राणों की बलि दे, प्रभु को रोज रिझाते हैं,
वे कितने नासमझ हैं, कहते, श्रद्धा–सुमन चढ़ाते हैं।

दिल कुंठित हुआ मेरा, जीवन दूभर हुआ मेरा,
मैं सुख से जीवन जी न सका, शनैः शनैः अन्त हुआ मेरा।

मेरा ही रंग–रूप था मेरे लिए, कितना अभिशाप बना,
समय से पहले ही मुझको, जीवन से धोना हाथ पड़ा।

सुन्दर होना पाप है, यह चिन्तन का विषय अनूप हुआ,
कारण मेरी अकाल मृत्यु का, मेरा अपना रूप हुआ।

सीमा के पहरेदारों

सीमा के पहरेदारों तुम, जान पर अपनी खेल रहे,
देश की खातिर छाती पे तुम, गोली को भी झेल रहे।

ये ना सोचो देश ये सारा, मीठी नींद में सोता है,
तेरे सीने की गोली का, दर्द हमें भी होता है।

उठो जवानों शत्रु की अब, अकल ठिकाने लानी है,
बार–बार जो उफन रहा है, औकात उसे बतलानी है।

युवकों में भी जोश भरा है, रक्तदान की होड़ लगी,
कोई कमी न आने देंगे, जनता सारी साथ खड़ी।

पाक के शासक बने हो दानव मानवता का नाम नहीं,
लातों के तुम भूत बने हो, बातों का परिणाम नहीं।

थोपा है तुमने रण हम पर, अब नहीं तुम बच पाओगे,
ऐसा मज़ा चखाएंगे, तुम युद्ध छेड़ पछताओगे।

तीन बार जो धरती जीती, हमने फिर लौटा दी थी,
टूट गया था दिल सेना का, जिसने जान लड़ा दी थी।

ताशकंद जैसे समझौते, अब नहीं हम दोहराएंगे,
जीत के सारा पाकिस्तान, तिरंगा वहीं लहरांएगे।

अपने खून का हर कतरा, हम देश के लिए लगाएंगे,
मां की रक्षा की खातिर, प्राणों की बलि चढ़ाएंगे।

--**--**--

व्यंग्य

मैं ही असली नेता हूं

नेताओं अब कुर्सी छोड़ो,
बहुत किया घोटाला है,
बड़े–बड़े दिग्गज भी इसमें,
कर गए कांड हवाला हैं।
पांच साल अब हो गए पूरे,
हम को भी कुछ करने दो,
देश का भट्टा दिया बैठा,
और इसे न उजड़ने दो।
कुर्सी से क्यों चिपके बैठे,
तखत बिछा कर सोवो तुम,
पांच साल जो कांटे बोए,
देख उन्हें अब रोवो तुम।
जनता सोच में पड़ी हुई है,
किसका करे चुनाव इस बार,
सभी चोर डाकू और ठग हैं,
किस पर करें भला एतबार।
यही सोचकर नामांकन,
मैंने भरा तुरन्त इस बार,
एक बार यदि सफल बना दो,
देश का कर दूं बेड़ा पार।
घोषणा पत्र सुनो तुम मेरा,
सोच समझकर कहता हूं,
सबसे सस्ता सबसे उत्तम,
सबकी सुविधा रखता हूं।
जन वृद्धि है बनी समस्या,
इसका हल करवा दूंगा,
पांच साल के लिए सभी के,
राखी मैं बंधवा दूंगा।
घूंघट की मैं प्रथा चलाकर,
परदा फिर से ला दूंगा,
बुरी नज़र न पड़े किसी पर,
ऐसा माहौल बना दूंगा।

नये भवन और उद्योगों में
भूमि नहीं खपाऊंगा,
जितनी भी है धरती बाकी,
सबमें प्याज़ उगाऊंगा।
नौकरियां सब बन्द करूंगा,
दूंगा सबको गाए भैंस,
दूध दही मक्खन से खिचड़ी,
खाकर करेंगे सारे ऐश।
अल्ट्रा टैस्ट को बन्द करूंगा,
कहीं सन्तुलन न रह पाए,
लड़कियों की कमी के कारण,
लड़के क्वारे न रह जाएं।
बिजली घर सब बंद करूंगा,
मच्छरों से नींद नहीं आएंगी,
रात रात भर जागेंगे तो,
चोरी नहीं हो पाएगी।
स्थान–स्थान पर कुएं होंगे,
सुन्दर पनघट देखोगे,
सजी धजी बहू बेटी को तुम,
दोघड़ भरते देखोगे।
चौपाल लगेगी शाम को सबकी,
हंसी मज़ाक सुनाएंगे,
टी.वी. बिन बढ़िया मनोरंजन,
आपस में कर पावेंगे।
मौज करोगे मेरे राज में,
नहीं कोई हुक्म चलाएगा,
हँसते–गाते, खाते–पीते,
सारा जीवन कट जाएगा।
एक बार अवसर दो मुझको,
मैं ही असली नेता हूँ,
सभी समस्याओं का हल मैं,
मिनटों में कर लेता हूँ।

मन का दीप जलाऊँ कैसे ?

दीवाली की रात कहूँ,
या अमावस की,
इसे पूनम का सा,
आभास दिलाऊँ कैसे ?
मन का दीप जलाऊँ कैसे ?

नहीं लगता मुझे,
दीप जलाने से,
मन का दीप भी जल पाएगा।

चहल–पहल बेशक है सब ओर,
पटाखों की आवाजें बच्चों का शोर,
लोगों के हाथों में मिठाइ,
लक्ष्मी की मूर्तियां,
कैलेण्डर, सुन्दर फुलझड़ियां
खील पताशे, दीये, कुल्हड़ियां,
सुन्दर कंडील, सजे गुलदस्ते लिए,
घरों को लोग बढ़ रहे हैं।

त्यौहार की औपचारिकता और
खुशी का प्रदर्शन ज़रूरी है।
शायद यही हमारी मज़बूरी है,

किन्तु भीतर से सब दीख रहे,
गम्भीर परेशान से,
चेहरों पर झलकती हैं,
निराशा की स्पष्ट रेखाएं।
होठों पर झूठी हँसी और,
भविष्य की चिन्ताएं।

यूं तो मिठाई भी बांटी गई,
दीप जलाए गए,
पूजन किया गया,
रात भर बड़ा सा दीया जलता रहा,
लक्ष्मी के आने की प्रतीक्षा रही,
आस लगाई झूठी ही सही,
किन्तु जब,
सबेरा हुआ, वही सूनापन,
बुझे दिये, मुरझाए फूल,
लक्ष्मी भी नहीं आई,
सुनहले सपनों पर पड़ी धूल,
मन का अन्धेरा ज्यों का त्यों,
क्या ये ही दीवाली थी ?
हज़ार दिए जलाने पर भी,
रात काली की काली थी।

--**--**--

नारी : एक चेतावनी

हे नारी तेरा आत्म समर्पण,
तेरा जीवन दर्शन,
धन्य है, वन्दनीय है,
अतुलनीय है, प्रशंसनीय है।
तेरा अस्तित्व तेरा अनुराग है,
तेरा आधार तेरा सुहाग है।
तेरा व्यक्तित्व उस बूंद के समान है,
जो सीपी में गिरी तो मोती बन गई,
धरती पर गिरी तो कीचड़ बन गई।
तेरी पहचान तेरा निर्मल प्यार है,
मां की ममता है, दुलार है।
और तेरी सहनशीलता की क्या उपमा दूं
तूने विरोधों में जीना सीखा है,
होठों को सीना सीखा है
तुममें अद्‌भुत सहनशक्ति है,
असीम पतिभक्ति है,
अनन्य श्रद्धा है, आसक्ति है।
किन्तु ! हे त्यागमयी,
तुझे अब तक जीना नहीं आया,
ज़हर भी पीया, मगर पीना नहीं आया,
तेरा आदर्श तेरे लिए अभिशाप बन गया,
तेरा त्याग तेरे लिए पाप बन गया।
तू तू ही रही, पुरूष आप बन गया
हे करुणामयी !
अब सोचो, समझो, जागो,
स्वयं को पहचानो, निन्द्रा त्यागो,
युग युग की रूढ़ियां यह आस्था,
ये अन्ध परम्पराएं, यह जुल्म की दासतां,
इन सबको तोड़ दो,
अतीत को मोड़ दो,
दासता को छोड़ दो।
अधिकारों के लिए लड़ना सीखो,
जीवन पथ पर बढ़ना सीखो,
नया इतिहास गढ़ना सीखो।
सदियों से हो रहे अनर्थ को बदलो,
जीना है तो जीने के अर्थ को बदलो,
जीने के अर्थ को बदलो,
जीने के अर्थ को बदलो।

--**--**--

अंधेरे-उजाले

सवेरे–सवेरे
छिपने लगते हैं जब सितारे
मैं पूर्व की ओर निहारा करती हूं
बड़ी उत्सुकता और कौतूहल से
कि कब सूरज निकलेगा,
ऊषा के माथे पर
कुमकुम का तिलक लगाएगा,
कलियों के उपवन में
अपनी कोमल और सुनहरी
किरणों से छूकर गुदगुदाएगा, हंसाएगा।
कब वो बांटेगा उजाला
उदास धरती को ?

ओह ! वो आया और
उजाला बांट चला भी गया।
मैं देखती, सोचती रह गई,
मेरे और उसके बीच न जाने,
कब बादल आ जाता है
मेरी बारी कब आएगी ?
कब महकेगी मन की बगिया ?
कब चहकेगी मन की चिड़िया ?

दिनभर उदास मन लिए,
सूनी आंखों से ताकती रही।
दिन ढलने लगा
परछाइयाँ लम्बी होने लगीं
मेरा मन बोझिल हो गया,
दाता सबको बांट उजाला,
आज भी लौट गया

मेरा आंचल खाली का खाली रह गया
मुझे घेर लिया फिर अंधेरों ने
मैं फिर उदास हो गई

शाम सूनी, रात लम्बी, भीगी आंखें,
देह निःशक्त, निर्जीव,
एक कसक, एक टीस,
एक चुभन, एक प्यास,
फिर वही ऊब कुछ खोने का ग़म,
कुछ पाने की चाह।
इसी उधेड़बुन में ऐसा लगा,
मानो इक युग बीत गया।
फिर कब होगा सबेरा,
कब मिटेगा निराशा का अंधेरा ?
घड़ी की टिक–टिक तो चल रही है
किन्तु लगता है मेरे लिए समय रुक गया है
सोच में डूबी बोझिल आंखें
न जाने कब बन्द हो गई।

मुर्गे की बांग से चेतना आई,
चिड़ियों की चहचहाट दी सुनाई।
एक नई स्फूर्ति लिए उठी,
मन में फिर उसी उजाले की प्यास,
वही सिलसिला, हो गई निराश।
समय का मृग उसी मरू मरीचिका,
के पीछे दौड़ने लगा।
घुटन लिए जीवन बीतने लगा।
जब से होश सम्भाला,
निरन्तर खोज रही उजाला,
किन्तु मुझे मिला हर बार,
अन्धेरे का वही उपहार।
अब स्थिति यहां तक आ गई,
समय की निरन्तर ठोकरों से,
घायल मेरा चिन्तन इतना सिमट गया,
कि मेरे लिए अब
अंधेरे और उजाले का
अन्तर ही मिट गया।

अस्तित्व ही नहीं रहा

विशाल से जुड़ने की चाह ने
नदी को विवश कर दिया
अपना घर छोड़ने को
वह घर जो
दूध–धवल पर्वत की गोद में था,
चमकती चांदी सा शुभ्र, शीतल,
कहीं हरियाली का रेशमी कालीन
कहीं मन्द पवन के साथ
कभी ठंडी बयार कभी वर्षा की फुहार
गीत गाते पेड़ों की पंक्तियां
कभी कलरव की गुंजार,
कभी धुंध का कोमल स्पर्श
तो कभी बादलों का मधुर चुम्बन
इन सबके होते हुए भी
वह शैशव काल से ही
चल पड़ी उस घर को छोड़
एक अनजानी डगर पर जो

विशाल सागर तक ले जाने वाली थी
कभी वह एक बूंद थी
चलते चलते वह
स्वस्थ, सुन्दर, सुडौल बन
यौवन की मस्ती में हिलौरे लेने लगी
वह इठलाती, इतराती, मचलती
चली जा रही थी,
नहीं थी परवाह
ऊंचे–नीचे, टेढे मेढे रास्तों की
खुरदरे–कंटीले–पथरीले
रास्तों को चीरती बढ़ती रही
मन में एक ही चाह थी
जिसके सहारे सब बाधाओं को
लांघती चली जा रही थी

वह थी, विशाल से मिलने की प्रबल चाह

अन्त में उसकी कठिन यात्रा
लक्ष्य के समीप पहुंची
तो सामने क्या देखती है
विराट सागर ठाठें मार रहा है
कामना वासना का उफ़ान
सम्भाले सम्भल नहीं रहा था
वह नदी जो विशाल से
मिलने को उत्सुक थी, समर्पित थी
सागर का उफ़ान, तूफ़ान, विशालता देख
कुछ ठिठक गई
उसकी गति मन्द हो गई
सहसा वह बिखर गई, टूट गई,
कई धाराओं में बंट गई,
उसकी राह कंकर पत्थरों ने रोक ली
पांव आगे बढ़ने से इन्कार करने लगे

सोचने लगी लौट चलूं
सागर में उठे ज्वार भाटे के सम्मुख
उसका अस्तित्व कहां रहेगा ?
किन्तु अब पीछे लौटना असम्भव था
कुछ सोचना, शंकित होना निरर्थक था
आखिर उस विशाल सागर के पौरुष को
स्वीकार कर नदी ने बिना सोचे
अपने को उसमें विलीन कर दिया।
वह मीठी नदी सागर से मिल
खारी हो गई
उम्र भर थपेड़े खाना उसकी
मज़बूरी हो गई
अब वह पछता रही थी
कि उसका अस्तित्व ही नहीं रहा।

जन्म से मृत्यु तक

कब से सुन रहे हैं शोर,
जिस दिन से जन्म हुआ,
प्राणी जा रहा है मृत्यु की ओर।
देख देख खुश होते हैं हम,
बच्चों का हंसना, घुटनों चलना,
दौड़ना, तुतलाना, किलकारना,
और फिर,
शिशु से बालक बनना,
उछलना, कूदना, शोर–शराबा और,
तोड़–फोड़ करना।
देखते ही देखते,
यौवन का पदार्पण होता है।
मनुष्य सुनहरे सपने संजोता है,
धीरे धीरे दो प्रेमी हृदय,
बंध जाते हैं एक सूत्र में,
फिर अब
आता है बुढ़ापे का आतंक,
जैसे बिच्छू मारता है डंक।
लग जाते हैं दोहराने उसी लीक को,
जो उनके माता–पिता ने पीटी है।
परन्तु यह क्या, अकस्मात अप्रिय घटनाएं,
झकझोड़ देती हैं,
जीवन की दृष्टि को ही
मोड़ देती हैं।
रुक जाती हैं जीवन की क्रीड़ा,
पतझड़ की बन भयानक छाया,
देती है असहनीय पीड़ा,
होने लगता है ऊर्जा का ह्रास,
मन हो जाता है निराश।
दुर्बलता, थकान, रोग और,
चिन्ताओं के पार,
दिखाई देता है मृत्यु का द्वार।
बुढ़ापा लाता है ऐसा परिवर्तन,
मिथ्या लगता है माया का नर्तन।
सोचता है, मैंने क्या खोया क्या पाया,
कहां जाना है, कहां से आया।
जीवन के अतीत में झांकता है
तो पछताता ही नज़र आता है।
अब तक दुःख–सुख, मेरा–तेरा,
घृणा–प्रेम, मित्र–शत्रु, अपना–पराया,
मनुष्य जन्म से मृत्यु तक,
इसी उधेड़बुन में उलझा पाया।
यह हम सब कुछ देखकर भी,
सही पथ अपनाते नहीं,
कुछ नई सोच लेकर,
जीवन बनाते नहीं।

--**--**--

प्रतीक्षा

तेरे आने की प्रतीक्षा में,
हमने क्या कुछ नहीं किया।
शाम से पहले ही अधीर हो,
जला दिया दीया।
बिखरी चीज़ों को समेटा
कुछ को करीने से रख दिया।
कभी कालीन को, कभी पायदान को झाड़ा
कभी मेजपोश, कभी चादर को संवारा
कभी गुलदस्ता सजाया
और सारे कमरे को महकाया।

यूं बाट जोहती रही
कभी द्वार को, कभी स्वयं को देखती रही
आइने को चमकाया
नया परिधान पहन
भांति–भांति की भाव भंगिमा को
शीशे में उतार दिया
माथे पर बिंदिया,आंखों में काजल लगाया
कुछ शरमाई, कुछ सकुचाई

दुपट्टे को सम्भाला,
पल्लू सिर पे डाला
तेरे चित्र को निहारा,
फिर उसे सीने से लगा लिया।

कभी परदा उठाया
खिड़की से झांका
दूर तक शून्य ही शून्य
आख़िर निराश हो परदा गिरा दिया।

तेरी इंतजार ने पागल सा बना दिया
बाट जोहते–जोहते,
जब कोई आस न शेष रही
हार कर बैठ गई।
दिन ढला, शाम हुई, रात हुई
सबेरा होने तक दिया जलता रहा
मेरे मन की तरह।
मैं प्रतिपल तेरी प्रतीक्षा करती रहूंगी
और रात भर दिये में तेल भरती रहूंगी।

--**--**--

कविता कामिनी की नियति

मैं हूं कविता कामिनी
मेरा स्रष्टा ही मेरा संरक्षक है।
जब मैं सुन्दर, स्वस्थ, विकसित
अवस्था को प्राप्त करती हूं तो
मेरा संरक्षक मेरा नाता
किसी पत्र सम्पादक से
जोड़ने का प्रयत्न करता है।

हर स्थान से उत्तर मिलता है कि
कविता पसंद आई तो
स्वीकार कर ली जाएगी,
साथ ही यह शर्त है कि
रचना सर्वथा मौलिक कुंआरी
अर्थात् अप्रकाशित होनी चाहिए।
कविता का पहले कहीं
प्रदर्शन न हुआ हो।
यदि कहीं अन्यत्र सम्बन्ध
जुड़ चुका है तो हमसे
रिश्ते की आशा न करें।

ओह ! कैसी विडम्बना है मेरे लिए ?
मुझे भी नारी की भांति
रूढ़ियो की सीमा में
बांध कर रखना चाहते हैं।

मेरे पंख काट कर
पिंजरे में डाल दी जाती हूँ।
मेरे प्रचार, प्रसार, प्रगति, प्रसिद्धि में
कितने बाधक हैं ये संकुचित बुद्धिजीवी
मैं कब और कैसे मुक्त हो पाऊंगी
इन बंधनों से कोई बताए ?

जो भी सम्पादक मुझे अपनाता है,
अपने तक ही सीमित रखना चाहता है
मैं देश–विदेश के
एक छोटे से भाग में ही
सिमट कर रह जाती हूं।
क्या इतना ही मेरा मूल्य है ?
मुझे घुटनभरा जीवन
क्यों जीना पड़ता है ?

मैं और मेरा स्रष्टा दोनों ही
घुट–घुट कर रह जाते हैं।
न जाने कितने दिन व रातें जागकर,
मुझे रचा व तराशा गया होगा।
कोमल संवेदना के सुन्दर रंग भरे गए होंगे,
क्या इसी दिन के लिए कि
एक ही खूंटे से बंधी रह जाऊँ ?
दुनिया की हवा तक
मुझे छू न सके।
मैं सोच रही हूँ
क्या यही है
कविता कामिनी की नियति ?

श्रमिका

कोमल हाथ हो गए पत्थर
तोड़ते–तोड़ते पत्थर निरन्तर
कुछ चूड़ियां टूट गई
कुछ चिटक गई
शेष गर्द से भर गई।
मूंज की भांति लटें लटक रही
कुछ माथे पर कुछ गालों पर
माथे की बिंदिया और
आंखों का काजल
घुल गया पसीने में
क्या रस है इस जीने में।
उसने अवश्य ही सबेरे–सबेरे
चेहरे को सजाया–संवारा होगा
परन्तु दिनभर की
चिलचिलाती धूप ने,
उड़ती धूल ने,
चेहरे का रंग बदरंग कर दिया।
प्रातः जो दीख रही थी
साफ, सुन्दर, स्वस्थ
शाम तक चेहरा मुरझा गया,
कमर टेढ़ी हो गई, गर्दन झुक गई,
थके मांदे शरीर और अनमने मन से
टूटे–अनटूटे पत्थरों पर
दृष्टि डालती है,
फिर सूर्य को ढलते देख
सोचने लगी
काम कम तो पैसे भी कम
फिर से गति को बढ़ा देती है
हिम्मत बटोर लेती है
सोचती है
राशन का सामान, बूढ़ी सास की दवाई
शराबी पति की फटकार
भूखे बच्चों की कतार
ओह ! मुझे काम करते रहना होगा।
सांझ हो गई
सब श्रमिक साथी
चलने को तैयार हैं
मुझे भी सबके साथ ही
जाना होगा।
अकेली रह गई तो खैर नहीं !
एक ओर ठेकेदार की बुरी दृष्टि और
समाज के बंधन
दूसरी ओर पति–रिश्तेदार
लांछन लगाने से नहीं हिचकेंगे।

हाय, समय से पहले ही बुढ़ापा
गरीबी और चिन्ताओं की रेखाओं ने
निचोड़ लिया उसके यौवन का रस
लगता है इस खंडहर ढांचे पर
कभी कोई सुन्दर
तितली नहीं मंडराएगी
फिर भी न जाने किस आस पर
वह निभा रही है
एक अबला नारी का अपना कर्त्तव्य।

विधवा : एक ज्वलंत प्रश्न

आज यह रात
इतनी भयानक क्यों ?
रात के सन्नाटे में
आवाजें अचानक क्यों ?
मेरी चेतना में बाहरी कोलाहल का
हस्तक्षेप आज क्यों ?
ठीक है ! मैं आज अकेली हूँ
असहाय, असुरक्षित, अनाथ,
अधीर, अशान्त हूं तुम्हारे बिना,
मैं अभागिन, अबला, अशुभ
उपेक्षित और अचानक घृणित हो गई हूँ।
बादल, बिजली, हवा के
झोंके तक मुझे डराते हैं,
तुम्हारे न होने का
अहसास कराते हैं।
रिश्तों और समाज का
घेरा कसता जा रहा है
मौसम, दृश्य, दृष्टियां,
लिबास और सम्बोधन
एक ही क्षण में सभी कुछ
बदल गया और
मेरा नाम "विधवा"
रख दिया गया।
इस नाम का अर्थ और
परिभाषा मुझे सब समझा रहे हैं।
मेरी बिंदिया मिटा दी गई
चूड़ियां तोड़ दी गई
बिछुए निकाल दिए गए
सिंदूर पोंछ दिया गया
और मंगलसूत्र उतार दिया गया
तुम्हारी सब निशानियां
मुझसे छीन ली गई हैं।
अब मैं दीन हूं, हीन हूं
मेरी परछाई तक अब
अमंगलकारी हो गई।
तुम अपनी इस बेचारी को
एक बार आकर तो देखो,
कि क्या से क्या हो गई !
मैं पूछती हूँ कि क्या तुम्हारी
बिंदिया, बिछुए, सिंदूर,
मंगलसूत्र, चूड़ियां, इन सबका
मूल्य मुझे जींवन भर
चुकाते रहना पड़ेगा।

--**--**--

फूल और पत्थर

कैसे होगा मिलन
हमारा–तुम्हारा
दिखता नहीं मुझे
कोई किनारा
तुम और मैं
नदी के जैसे दो छोर
कितनी दूरियां है
कैसे भर पाएगी खाई
जो अब तक न भर पाई
अन्तर धरती–आकाश का
रात और दिन का
करुणा–कठोरता का
बंधन–मुक्ति का
सम्भव–असम्भव का
सब प्रयास निष्फल,
निष्कर्ष शून्य
लगता है तुम, तुम ही रहोगे
मैं, मैं ही रहूंगी
कैसे होगा एकीकरण
फूल और पत्थर का।

जीवन

कुछ पाने की चाह,
कुछ मिलने की खुशी,
कुछ खोने का ग़म।

मैं जोड़ती रही

मैं उम्र भर
टूटते रिश्ते की डोरी को
गांठ लगाकर जोड़ती रही
और वो तोड़ते रहे
वो तोड़ते हारे नहीं
मैं जोड़ती हार गई
क्योंकि अब रिश्ते रूपी
डोरी में
गांठ लगाने की
कोई जगह ना के ही
बराबर रह गई

दीये का साथ

मेरे साथ मेरी तरह
रातभर दिया भी जलता रहा।

--**--**--

सुन रही हूं आज दीवाली है

सुन रही हूं आज दीवाली है
तुम शौक से दीप जलाओ
खुशी मनाओ
पर मुझे यह तो बताओ
वन से लौटे राम कहां है ?
यहां मैली पतली ढीली त्वचा से ढके
हड्डियों के ढांचे बहुत दीखते हैं
उनमें सांस चलता तो नज़र आता है
परन्तु चेहरे पर धंसी आंखें
यों डूब रही हैं,
जैसे तेल बिन दीपक बुझने को है
ये क्या मनाएं दीवाली ? क्या जलाएं दीप?
जिनका जीवन दीप ही बुझने को है।

देख नहीं रहे चलते फिरते कंकाल,
जिनकी होने को है मृत्यु अकाल
लगता है जीवन का अन्त करीब है
लोग कहते हैं "अपना अपना नसीब है"
अरे ! क्या किसी के दिल में नमी नहीं रही
क्या किसी दुखी के लिए दिल में ग़मी नहीं रही
अरे ! माटी के दीपों में नहीं
हाड़—मांस के पुतलों में तेल डालो,
इनमें जीवन का फिर से संचार होगा
तभी तुम्हारी मनुष्यता का उद्धार होगा

कुछ में जीने की चाह दिखाई देती है,
मिठाई की दुकान उनको ललचाती है,
किन्तु खरीदकर खाने में असमर्थ है,
मन मसोस कर खड़े—खड़े घूरते रहते हैं बस,
ओह ! कढ़ाई में घी जल रहा है।
कहीं गरीब का दिल जल रहा है।

महंगाई ने सबको निचोड़ दिया है,
घर में जलाने को तेल न दिया है,
फिर भी होठों पर झूठी हँसी बिखेर रहे,
भीतर से अपनी असमर्थता समेट रहे।
सुनो बच्चो, यदि बाजार चलना है तो,
केवल देखते रहना, लेने को नहीं मचलना है।
ओह ! कुछ तो मिठाई पटाखों से लदे जा रहे हैं
और कुंछ मन मारे खाली हाथ चले जा रहे हैं,
क्यों न सब मिल—बांट कर खाएं हम,
हर दिल में खुशियों के दीप जलाएं हम।

--**--**--

मेरी लेखनी आहत होती रहेगी

मेरी लेखनी घायल होती है
जब देखती है शोषण किसी निर्धन का
होरी जैसे की करुण विवशता का।
देखा नहीं जाता उस मां का रुदन
जिसके जवान बेटे की लाश
पड़ी हो उसके पास

मेरी लेखनी आहत होती है
जब देखती है किसी
इठलाती, इतराती नई नवेली
दुल्हन को जो आंखों में
अनगिनत सुनहरी सपने
संजोए आती है और
एकाएक कैद हो जाती है पिंजरे में
जिह्वा और मस्तिष्क पर
ताला लग जाता है।

मेरी लेखनी चिन्ता में पड़ जाती है
जब देखती है दुर्दशा उन माता पिता की
जिनकी जवान बेटियां
दहेज की शिकार हो जाती हैं।

मेरी लेखनी अधीर हो जाती है
जब कोई शराबी, शराब पीकर
अपनी बीबी पर कहर ढाता है
बच्चे रोते–बिलखते हैं,
पर सहम कर चुप हो जाते हैं
अपनी मां पर अत्याचार होते देख।
अबोध बच्चों का मस्तिष्क सुन्न हो जाता है
क्रोध और भय स्थाई कुण्ठा का रूप ले लेता है,

मेरी लेखनी तिलमिला जाती है
जब देखती है किसी निरपराध पर
पड़ती कोड़ों की मार
चारों ओर फैलता हुआ उसका चीत्कार
और कोई भी उसे बचा सकने में लाचार।

मेरी लेखनी को ठेस लगती है उस समय
जब संत महात्मा बनाते हैं अपना पंथ
और खींच देते हैं दीवार मनुज के बीच,
और जब पैसे वाले हथिया लेते हैं उच्च पद
और देखते रह जाते हैं प्रतिभाशाली प्रत्याशी

मेरी लेखनी विद्रोह से भर जाती है
जब कोई निरीह जीव को सताता है
बलपूर्वक वध कर देता है।

मेरी लेखनी तड़प उठती है, जब
सत्य का गला घुट रहा हो
झूठी गवाही से।

मेरी लेखनी कराह उठती हैं
जब देखती है दशा उस विधवा की
जब कोसा जाता है उसके भाग्य को
उतार दिया जाता है सब श्रृंगार
छोड़ दिया जाता है जीवन भर
आग में तपने के लिए।

मेरी लेखनी चिल्ला उठती है उस पर
जब कोई भूखा भेड़िया, अबोध बालिका को
अपनी वासना का शिकार बनाता है

ईश्वर जाने मेरी लेखनी कब तक
आहत होती रहेगी।
ऐसी घिनौनी घटनाएं प्रतिदिन देखकर
कभी चुप न रहेगी।
वह अन्याय व अत्याचार के विरुद्ध
विरोधी आवाजें सदा उठाती रहेंगी।

तू प्राणी होकर भी

तू प्राणी होकर भी
प्राणों का मूल्य नहीं जानता
किसी का जीवन लेने से
तेरा मन नहीं कांपता
क्या तू नहीं जानता
एक जान के पोषण में
एक जान गल जाती है
तू पल में उसकी हत्या कर
अपने को है क्यों सही मानता ?

तू नहीं कर पाएगा आभास
उस मां की पीड़ा का अहसास,
जिसके जवान पुत्र की लाश
पड़ी हुई है उसके पास,
जब तू एक की जान लेता है
तो उसका कितनों से ही नाता है।
वह किसी का भाई
तो किसी का बेटा होता है।
और किसी का पति
तो किसी का पिता होता है।

कोई शहनाई बजाता है
कोई बधाई गाता है
कोई दूल्हे को सजाता है
कोई सेहरे के हार पिरोता है
अचानक रंग में भंग करके
कैसे तू खुश होता है ?

कहीं मेहन्दी अभी सूखी नहीं
शिशु की आंख खुली नहीं
मां को सिला मिला नहीं
बाप की लाठी बना नहीं
चलते जीवन को समाप्त करता तू
हैरान हूं ! मानव रूप में
कैसे दानव बनता तू ?

यह सही दिशा में कदम नहीं,
इस करम में कोई धरम नहीं
सबको बनाने वाला एक है
फिर उसमें तुझमें क्या भेद है ?
तू एकान्त में बैठ सोच ज़रा
तेरी आत्मा तुझे झकझोरेगी
चिन्ता कभी पीछां न छोड़ेगी
उनकी आहों से नहीं बच पाएगा
अन्त समय न कुछ कर पाएगा।

--**--**--

मुझसे ही कुछ भूल हुई है

देखा जो अभावों में पलते हुए शालू को
तो यूं ख्याल आया मीना को
क्या बनेगा मेरे धन–दौलत का
जब किसी के काम न आया
सोचा, कि बनादूं जिन्दगी ग़रीब असहाय की
ना रक्खूं कोई सोच अपने पराए की
किसी के काम आना मनुष्य का फर्ज़ है
और जब मैं सम्पन्न हूं तो
कुछ करने में क्या हर्ज़ है
उसी का नूर है मुझमें और उसमें
फिर मैं क्यों रखूं अन्तर, उसमें और मुझमें।

ऐसा सोच वह उसकी हर सहायता करने लगी
उदारचित हो, वह यूं कहने लगी
मेरी हर वस्तु को तुम अपना सा जानो
इस घर को भी अपना सा मानो
यह कह कर अपने सभी सौंदर्य प्रसाधनों का
ढेर लगा दिया सुन्दर वस्त्रों का अम्बार लगा दिया
जो चाहो जब चाहो इनका प्रयोग कर सकती हो,
आज से हम दोनों सखी हैं,
मुझ पर दम भर सकती हो।

सखी भी सरलचित थी, उसकी बात मानने लगी
उसकी हर बात में अपनापन जानने लगी
और सोचने लगी
मीना के पास किसी चीज़ की कमी भी नहीं है,
मेरे प्रति उसके दिल में स्नेह की भी
कोई कमी नहीं है।

मीना की मित्रता पर,

शालू बहुत प्रसन्न रहने लगी
देखते ही देखते, मुरझाई कलि से
खिला फूल बनने लगी
खूब बनी–ठनी सुन्दर तितली सी उड़ने लगी
जो कभी अभाववश यौवन को दबाए हुए थी
जिसके नैन–नक़्श तीखे परन्तु तरूणाई न थी
आज आस–पास के भंवरे उस पर मंडराने लगे
उसके भी मदहोशी में कदम डगमगाने लगे
वह जो भी साज सिंगार करती,
उस पर खूब फबता था
यह सब देख मीना को धक्का सा लगता था
सोचने लगी, कल तक जिसे
कोई न जानता था, न देखता था
आज उसी की चर्चा है, हर कोई उसी की ओर लपकता है
आज उसकी अपेक्षा और मेरी उपेक्षा हो रही है
आज उसकी पूछ और मेरी अवहेलना हो रही है
आज वह जीती सी और मैं लगती हूं हारी सी
आज मैं लगती साधारण सी और
वह लगती प्यारी सी

ऐसे मीना के दिल में ईर्ष्या जगने लगी
अपने किए पर पछताने लगी
सहेली से मीना खिंची–खिंची सी रहने लगी
हर समय झुंझलाहट में रहने लगी
शालू भी मीना की मनस्थिति भांप रही थी
परन्तु पीछे लौटना उसके बस की बात नहीं थी
फिर भी शालू, मीना से पूछ ही बैठी
"क्या मुझसे कुछ भूल हुई है ?"
मीना बोली – नहीं, तुझसे नहीं,
मुझसे ही कुछ भूल हुई है।

मेरा घर भी रौशन हो जायेगा

(दीयेवाले की ज़ुबानी)

दीया बनाने को
कहीं से लाया मिट्टी
कहीं से लाया पानी
सांचे में ढाला, आग में पकाया
ठंडा कर, चुन–चुन कर
साफ़ किये, बोरी में डाले
कंधे पर रख, मन में आस लिए
चला बेचने को
सोचा कोई खरीदार मिल जाए
तो उसका घर भी रौशन होगा
मेरा भी घर रौशन हो जाएगा।
सड़क के किनारे
दीयों का ढेर लगाया
दिन भर धूल धूप मिट्टी में बैठा
दीयों को देखता, सम्भालता रहा
ग्राहकों की बाट जोहता रहा
कोई आता तो मोल–तोल कर
सिर खपा के चला जाता
काश ! कोई ऐसा भी आए
मुंह–मांगे सही दाम
देकर दीये ले जाय
तो उसका घर भी रौशन होगा
मेरा भी घर रौशन हो जाएगा।
दीवाली का बैचेनी से
इंतज़ार करता हूं
एक–एक दीया
प्यार से गढ़ता हूं
हर दीये के साथ आस जुड़ी है
परिवार की इसी पर आंख टिकी है
क्यों न टिके
इसी में उनके जीवन के
प्रश्न का हल निहित है
इसीलिए तो चाहता हूं
कोई इनको ले जाये
उसका घर भी रौशन होगा
मेरा भी घर रौशन हो जाएगा।
कुछ दीये बनाने में टूटे
कुछ तपाने में
कुछ टेढ़े–मेढ़े हो गए
कुछ लाने, ले जाने में टूटे
कोई मोल–तोल में छुड़ा ले
कोई सौ–दो सौ खरीदने के
लालच में भाव गिरवाले
कोई रूंगा, चूंगा मांगे तो,
कहीं सिपाही का डंडा खड़क जाए
खैर सब सहन करने के बाद
कोई खरीदार तो बने
वो अपना घर भी रौशन करेगा
तो मेरा भी घर रौशन हो जाएगा।
इन छोटे–छोटे दीपों को भी
मैंने खनकाते देखा
छांट–छांट कर ले जाते देखा
नख़रे सबको करते देखा
तुम सब तो हो न
सुन्दरता के पुजारी
मैं ये ही सोचकर सबर कर लूंगा
तुम मेरे हाथों से बनाए दीयों से गर
अपना घर रौशन करोगे तो
मेरा भी घर रौशन हो जाएगा।

दर्द ही मेरा साथी है

मन के किसी कोने में
छिपी है यादें
खून के रिश्तों की
जो छोड़ गए मुझे अकेला
जूझने को समय से,
समाज से, रिश्तों से

उनकी याद में
ह्रदय पटल पर दुखों की
कालिमा इतनी छा गई
कि उजाले को भीतर
झांकने तक नहीं देती

वे जो चले गए
लौटकर कभी आएंगे नहीं
उनकी यादें दिल से
कभी जाएंगी नहीं
मां की ममता
पिता की छत्र छाया
बहन का प्यार
बेटे से भविष्य की
मधुर कल्पनाएं

सब धराशायी हो गई
बचे रिश्ते भी जंजीर बने
दर्द से नहीं देते उभरने

संघर्ष विफल है
सपने फिर भी बुनती हूं
ये ही मुझे
जीवित रखे हुए हैं
दर्द भी मेरा
साथ नहीं छोड़ता
मुझे घेरे रहता है
अब दर्द ही मुझे
प्रिय लगने लगा
ये ही वफादार साथी है
जो सदा साथ रहेगा

कौन कहता है ?
जहां से अकेले
जाना पड़ता है
नहीं ! नहीं !
मेरे साथ मेरा
दर्द भी जाएगा।

--**--**--

मेरी डायरी के पन्ने मत उलटो

मेरी डायरी के पन्ने मत उलटो,
इसमें मेरे वीरान दिनों की दास्तान बन्द है,
उसे बन्द ही रहने दो।
कुछ पन्ने भीगे हैं आंसुओं से,
कुछ सिसक रहे कुछ आहें भर रहे नाकामियों से,
उसमें मेरी विवशता की सांकल बन्द है,
उसे बन्द ही रहने दो।
कहीं घुटन, कहीं चुभन, कहीं तपन,
तो कहीं कला का मरण, कहीं प्रतिभा का हनन,
इन पन्नों में मेरी छटपटाती आकांक्षाओं का कफ़न बन्द है,
उसे बन्द ही रहने दो।
कहीं बेबसी का आलम, कहीं एकाकी जीवन,
कहीं टिमटिमाती आशाएं तो कहीं तेज़ हवाएं,
इनमें मेरे अनचाहे समझौतों का मौन आक्रोश बन्द है,
उसे बन्द ही रहने दो।
कहीं ढोंग, तो कहीं दिखावा, कहीं धोखा तो कहीं छलावा,
कहीं अभाव, कहीं तनाव, कहीं धूप कहीं छांव,
इनमें मेरे कटु अनुभवों का इतिहास बन्द है,
उसे बन्द ही रहने दो।
कुछ पन्नों में पाने की चाह, कहीं खोने का ग़म
मीठी आशाओं को संजोए, रखने का विफल प्रयास,
कुछ पन्नों में घनघोर संघर्षों से जूझते रहने का सिरदर्द बन्द है,
उसे बन्द ही रहने दो।
होश जाते हुए, विश्वास खोते हुए, प्रयास करते हुए,
जीवन चलता रहा, शाम होती रही, लक्ष्य खड़ा ही रहा,
कुछ पन्नों में कुंठा, ऊब, उदासी, पश्चाताप, पीड़ा का गहरासागर बन्द है,
उसे बन्द ही रहने दो।
अनेक समस्याएं, विडम्बनाएं, घटनाओं की कहानी,
कभी मिलना–बिछुड़ना, लाभ कभी हानि,
इसमें अशान्ति, विद्रोह, घृणा कहीं प्रतिकार की भावना बन्द है,
उसे बन्द ही रहने दो।

नारी : एक विडम्बना

नारी को खिलौना बना रखा है पुरुषों ने
हर तरह से कठपुतली बना रखा है पुरुषों ने,
पुरुष रक्षक भी है, पुरुष भक्षक भी है
कैसा विचित्र विरोधाभास है औरत की जिंदगी में
जो अस्मत लूटते हैं वही लांछन भी लगाते हैं
जो नारी ममता लुटाती है, करुणा बरसाती है
उसी को नारी की दुर्बलता बता कर उपहास किया जाता है
यदि दिल में बात रखती है तो घुन्नी व कुटिल बताते हैं
और स्पष्ट कहती है तो निर्लल्ज कहलाती है
वह पति को परमेश्वर समझे तो स्वयं दासी कहलाती है
और यदि स्वाभिमान से जिए तो हठी उद्दण्ड बन जाती है
यही पुरुष है जो नारी को चारदिवारी में बन्द रखकर
उसे नई रौशनी से वंचित रखते हैं, और फिर
उसे नासमझ, मूर्ख कह कर हर प्रकार से उसका शोषण करते हैं
लगता है प्रत्येक बंधन औरत के लिए बना है
पुरुष तो सदा स्वतंत्र है, उन्मुक्त है
शास्त्र और नियम पुरुषों ने अपनी सुविधा के लिए बनाए हैं
खुद दूसरों की बहिन–बेटियों के साथ रंग–रलियां मनाते हैं
और अपनी बहिन–बेटियों को दूसरों की दृष्टि से बचाते हैं
मैं पूछती हूं नारी कब तक पुरुषों के उपभोग की वस्तु बनी रहेगी ?
वह कब वास्तविक स्वतंत्रता, समानता का अधिकार प्राप्त करेगी ?

--**--**--

विचार बिन्दु

कैसे हो साथ हमारा–तुम्हारा
तुम बने रहे चट्टान की तरह
हम कितना भी बरसें
बादलों की तरह
तुम ना पिघलोगे न पसीजोगे
इंसान की तरह

हम मिलेंगे वहीं
जहां छोड़ा था कभी
तुम बादल की तरह
वहां आए भी तो
रुकोगे नहीं
कभी थोड़ा बरसकर
कभी बिन बरसे
निकल जाओगे आगे

आओ जग के शोर शराबे से
कहीं दूर चलें
समुद्र के किनारे
लहरों का संगीत सुनें
एक दूसरे के पीछे
भागें–दौड़ें–पकड़ें–खेलें
हारकर भी आलिंगन में
बंध जाएं
वह हार भी जीत होगी
आनन्दमयी होगी

आओ हम बैठते हैं,
किसी पुलिया पर
अपने एकाकी जीवन की बीती
कहानी कहकर हल्का होलें
अतीत में खो जाएं
एक दूसरे के करीब आ जायें
एकाकीपन के क्षणों की
बीती कसक को बांट लें।

झील की तरह शान्त रहना चाहती हूं
खो जाना चाहती हूं गहराइयों में
एकाग्रचित हो मनमाने सपनों में
खोए रहना! मेरा स्वभाव बन गया है
कभी कभी तो भीड़ में भी
अपने को अकेला पाती हूं
अपने में खोई रहती हूं
यदि ऐसे में कोई मेरी
शान्ति भंग कर दे तो
ऐसा लगता है जैसे किसी ने
ठहरे पानी में पत्थर फेंककर
उसमें हलचल मचा दी हो।

इस जहां में मुश्किल से ही किसी में
वफ़ा देखने को मिलती है
सबको वफ़ा के मेयार पर तोलती हूं
किन्तु कोई पूरा नहीं उतरता
तलाश ज़ारी है, तलाश जारी रहेगी।

भोले भाले बचपन और यौवन में
किसी बात का आभास नहीं हुआ
परन्तु मृत्यु के समीप आते–आते
अनेक झंझावातों से गुजरना हुआ
जीवन एक त्रासदी बन गया
क्या कहूं ! कभी लगता है
जीवन की दौड़ में बहुत पीछे रह गई,
या यूं कहिये....जीवन जिया ही कहां है

मेरे साथ मेरी तरह
दीया भी जलता रहा रात भर

हर पल को जीओ

जीने को सब जीते हैं
वे क्या जीए
जिन्हें कोई जीया जानता ही नहीं
ग़वा दिया जीवन
पशुवत खा पीकर।
धर पर भार
समाज पर भार
देश पर भार
बिना अर्थ के, बिना कर्म के,
कितने ही सुनहरी पल ग़वा दिए।

कुछ बीज प्रस्फूटित होकर भी
बिन दानों की फलियां बन,
मुरझा जाते हैं,
वे बीज व्यर्थ जाते हैं।
माली उनको स्थान देता है
समय पर सींचता
परन्तु क्या प्रयोग ? क्या उपयोग ?
और क्या उसका सहयोग ?
जीना व्यर्थ है
बेमाने है
क्यों पिस रहे हो
जीवन की चक्की में।
बन रहे हो नाव छिद्र वाली

बीत रहा है समय खाली
क्यों बना मृत तुल्य है।
हर पल का मूल्य है।
जो सोता है वह खोता है
समय बीतने पर रोता है।

पर तुझे ऐसे नहीं मरना है
जीवन में कुछ करना है।
उठो, जागो, सोचो, समझो
संवारों, सजाओ हर पल को
जो पल करोगे अर्पण
दूसरों के लिए,
वे ही पल हैं सार्थक
जीने के लिए।
हर पल पर दृष्टि रखो
हर पल श्रम से भर दो।
हर पल प्रेम से सींच दो
ले लो दुआएं
दीन दुखी लाचार की।

कुछ पल दो, धरती मां के लिए
बैठी है जो सीने में घाव लिए।
मां का ऋण उतार दो,
अपना हरपल वार दा।

--**--**--

मेरा नाम कहां खो गया

मां, जब से मेरी शादी हुई है
मैं अपना नाम भूलती
कहीं खोती जा रही हूं
तुम्हारे पुकारने में प्यार, सहजता, सरलता
अपनापन होता था।
यहां मुझे जो भी पुकारता है
उसमें आदेश का आभास होता है
मैं अपना नाम सुनने को तरस गई हूँ
मुझे हर समय सावधान रहना होता है
एक भय सा बना रहता है
तनावग्रस्त रहती हूँ, मां !
यहां मेरे कई नाम हो गए हैं
भाभी, चाची, ताई, जेठानी, देवरानी
अमुक की बहू, अमुक की बेटी, अमुक की मां
क्या मेरा कोई नाम नहीं है ?
मां ! मैं नहीं जानती
इन सबमें मैं कहाँ हूँ ?
मेरा नाम, मेरा अस्तित्व कहाँ है ?
वह नाम कहां खो गया ?
जिसे लेकर तुम पुकारा करती थी।

--**--**--

विकास का भ्रम

आज देता नहीं दिखाई
नीला आकाश टिमटिमाते तारे
मिलती नहीं साफ स्वच्छ हवा
सब ढक लिया
चिमनियों के धुएं ने
धूल उड़ाते, धुंआ फेंकते
वाहनों ने
ऊंची ऊंची इमारतों ने
घरों में उठी ऊंची दीवारों ने

आज नहीं मिलते देखने को
हरे–भरे खेत, खुले मैदान
धरती आकाश का मिलन
दूर क्षितिज पर

आज मनुष्य के जीवन में
यौवन कभी आया ही नहीं
समय से पहले बुढ़ापा
जमा लेता है अपना आधिपत्य
जीवन का बोझ ढोते हुए

न जाने किस आस में
जी रहा है आज का प्राणी
जब जानता है
नहीं आने वाली कभी बहार
न कोई आशा की किरण,
केवल जहर भरी दूषित हवा में
सांस ले रहा आज का प्राणी

प्रतिदिन मशीन बनकर
पिस रहा है, घिस रहा है,
कहने को विज्ञान की
सीढ़ियां चढ़ रहा है,
शीघ्रता से मृत्यु की ओर
बढ़ रहा है

मानव जी नहीं रहा है
अपितु जीवन का
बोझ ढो रहा है
प्रगति के नाम पर बस
यही विकास हो रहा है।

--**--**--

मुक्तक

मैंने रस्म–ए–मुहब्बत निभाई मगर,
फिर भी दुश्वार क्यों हैं हमारी डगर।
मैंने पलकें बिछाई थी जिसके लिए,
बन सका वो न अब तक मेरा हमसफ़र।

जिन्दगी में बहुत से मोड़ आते हैं,
कुछ दो कदम चलके नाता तोड़ जाते हैं।
जीवन के सफर में मिलने को बहुत मिले,
किन्तु कुछ दिल पे निशां छोड़ जाते हैं।

कुछ लोग तलवार से मार देते हैं,
कुछ लोग प्यार से भी मार देते हैं।
अजी मारने वालों की क्या कहिये,
कुछ लोग आभार से मार देते हैं।

देखे किशोर कवि ने जब ऐसे नजारे,
पर्वत, प्रसून, वृक्ष, लता, चांद, सितारे।
कर लिया स्वयं प्रकृति से गंधर्व विवाह,
कहता है भला कौन, रहे पंत कंवारे।

किस्मत के सितारे को टूटते देखा,
कश्ती को किनारे से छूटते देखा।
जब भी आई कभी संकट की घड़ी,
अपने प्रियजनों को भी रूठते देखा।

दीप जलता है तो अंधकार निगलता है,
पौ फटती है जब तो दिन निकलता है।
कितना भी क्रूर, कठोर ह्रदय हो कोई,
प्यार मिलता है तो दिल पिघलता है।

हरजन के सपनों को साकार करेंगे,
हर दुखी प्राणी का उपचार करेंगे।
जिस भी झोपड़ी में अन्धेरा होगा,
उसी झोपड़ी में हम उजियार करेंगे।

कुछ लोग मेरी समृद्धि से जल जाते हैं,
कुछ लोग मेरी सिद्धि से जल जाते हैं।
परन्तु कोई बताए, उनका हमने क्या लिया,
जो मेरी प्रसिद्धि से जल जाते हैं।

भाव-बिन्दु

खुद के आंसू स्वयं पौंछ लेते हैं,
पौंछने वाला तो कीमत चाहेगा।

भाव–बिन्दु
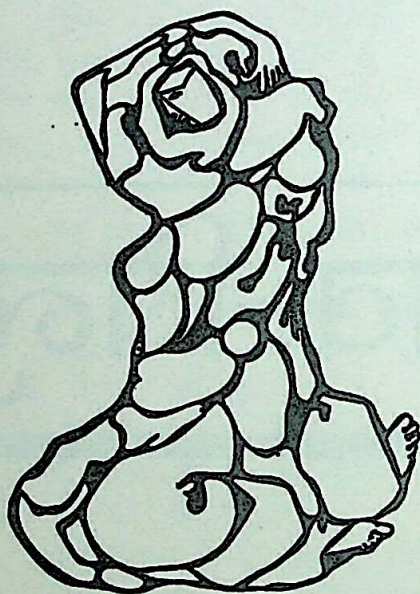
औपचारिकता निभाना मेरा फर्ज था,
तुमने समझी महोब्बत, तो मैं क्या करूं ?

दिया जो वक्त आने का, न आया आज तक भी वो,
उसी की चिर प्रतीक्षा अब हमारी मौत बन आई।

प्यार की किरण तो जीवन में, एक पल को आती है,
शेष सारी उम्र तो समझौते में कट जाती है।

खुद के आंसू स्वयं पोंछ लेते हैं,
पोंछने वाला तो कीमत चाहेगा।

विरह की आग से जब ह्रदय पिंघलता है,
तब गर्म लावा बऩ आंखों से निकलता है।

तुमने रोका भी नहीं मुझको बिठाया भी नहीं,
कैसे हैं लोग शिष्टाचार निभाया भी नहीं।

हर रोज़ नए धोखे हैं खाए हमने,
विश्वास नए फिर भी जगाए हैं हमने।

हम शब्दों में अपनी बात कहें,
अच्छा तो है, हमारा आचरण हमारी बात कहे।

पत्थर से भी मनचाही मूरत बना लेते हैं लोग,
तुम अभी तक कुछ न बन सके, जिन्दगी लगा दी हमने।

प्यार की सौगात हमको यों मिली,
जिन्दगी भर प्यार को तरस गए।

तेरे मिलने से पहले सोचते थे सफर लम्बा है,
मिला जो तूं तो मंज़िल आ गई अपनी

पूछा जो उनसे क्यों खफा रहते हो हमसे,
तो बोले क्यों मिलते हो गैरों से मुस्करा के।

दान देने से नहीं कम होता है,
सभी तेरे खाते में जमा होता है।

मेरे मरने पर वही रोया बहुत,
जिसने मेरी जान ली है।

अगर साथ तुमने निभाया जो होता,
तो मज़ा जिंदगी का कुछ और होता।

हम तो दो घड़ी मिलने को आए थे,
मगर दिल ने वापिस जाने से इंकार कर दिया।

तुम ऊंची आवाज से मेरी आवाज़ तो दबा सकते हो,
दिल में उठे तूफ़ान को दबाना, तुम्हारे बस का नहीं।

कुछ कमी तो रही होगी, उसकी जिंदगी में,
वो बिन बुलाए रोज़ मेरे पास आता है।

हर महफिल में मैंनें ढूंढा है तुझको,
मगर कोई चेहरा भी तुमसा नहीं मिला।

आजमाईश वो भी करते हैं, आजमाईश हम भी करते हैं,

ना वो पूरे उतरते हैं, ना हम पूरे उतरते हैं।

तेरे लिए सब रिश्ते तोड़ दिए थे,
तुमने फिर दर्द से रिश्ता जोड़ दिया।

अब तेरे मिलने न मिलने से कोई फर्क नहीं पड़ता,
हमने अपनी हर ख़्वाहिश को ही मिटा डाला।

मैंने बेगानापन तो तुममें देखा है,
जाने क्यूं फिर भी मन करता अनदेखा है।

जो बात होठों से कही नहीं गई,
वो मेरी आंखों में पढ़लो।

तुम्हें दर्द कहूं या दवा भी कहूं,
या दर्द भी तुम हो, दवा भी तुम हो।

वो हर रोज़ नया जख्म देते हैं हमको,
सोचिए किस हाल में हम जी रहे हैं।

इतना भी ज़ुल्म न ढाओ किसी पर,
कि वह तुमसे किनारा ही कर बैठे।

बीच राह में बुझ गया, अचानक दिया जलता हुआ,
खो गई राहें सभी, अंधकारमय जीवन हुआ।

तेरी इन्तज़ार तेरे से अच्छी थी,
आते ही कहते हो कि अब चला।

फिर से वादा कर गया आने का,

वही ग़म दे गया इंतजार का।

कोई इश्क का पैमाना लगाकर तो देखो,
कलेजा मुंह को आ रहा, सांस आख़री तो नहीं।

जब भी किनारा करने का सोचा उससे,
वह कोई न कोई प्रलोभन देकर मन फेर जाता।

उसके आने की ख़ुशी मना भी नहीं पाते,
उसके जाने का ग़म लग जाता है।

जब भी तेरे पास से उठना पड़ा,
दिल पर बोझ लिए उठे।

तुम तो कहते हो अभी क्या जल्दी है,
हमें भरोसा नहीं एक पल का भी।

दिल छोटा पड़ गया मेरे गमों के लिए,
एक दिल और चाहिए इन्हें रखने के लिए।

नहीं चाहते थे हवा भी लगे हमारे अफ़सानों को,
सितम हद से बढ़े तो खुल गई ज़ुबान।

वह बना सका न अपना राजदां,
उसने सीखा नहीं भरोसा करना।

उम्र से ही धोखा खा रहे हैं लोग,
हम प्यार भी जताने लगे तो क्या होगा ?

ध्यान भगवान बना देगा हमें एक दिन,
ख़ुद को ख़ुद से मिला देगा एक दिन।

आकर्षण है फूलों में सभी ख़ुशबू नहीं देते,
ये अच्छी सूरत वाले, सभी अच्छे नहीं होते।

मारा है उसको इश्क ने सब जानते हैं लोग,
तोड़े जो कोई दिल तो क्या वो कातिल नहीं होता ?

तरसे हैं तेरे प्यार को, मगर की फ़रियाद नहीं,
आया हो कभी मधुमास, यह तो मुझे याद नहीं।

हमने देखा है खुदा को भी बदलते हुए,
हमपे गुज़री है कुछ ऐसी, तुझे यकीं हो कि न हो।

हमें आसां रास्तों से गुज़रने की आदत है,
ये प्यार की राहें कहीं मुश्किल न बना देना।

हम तो कब के मर चुके हैं,
तुम सांस चलने को जिंदगी कहते हो।

दीवारों में झरोखे ही रख लो,
दिल ना मिले हवा तो मिलेगी।

मिट्टी की दीवारें तो टूट सकती हैं,
दिलों में दीवारें हो तो क्या करे कोई।

पूछते हैं हाल वो संजीदगी से,
फिर सरेआम उड़ाते हैं हँसी।

जीने के लिए जीने की सज़ा झेल रहे हम,

कभी से जीवन मृत्यु का खेल–खेल रहे हम।

वो डोली थी या चिता थी मेरे अरमानों की,
लगी थी जो आग उसे, आज तक बुझा न सकी।

सोचा था इस बार मिलेंगे ये कहेंगे वो कहेंगे,
मगर वो इस तरह मिले, कुछ कहते न बना।

अब कोई चेहरा भी पहचाना नहीं जाता,
वह भी अजनबी हो गया, जो अपना था कभी।

उम्र का तो तन पर असर है,
परन्तु हौंसला अभी बुलन्द हैं।

हर दिन एक समान नहीं होता,
यही सोचकर जिये जा रहे हैं।

गर्व करना बुरी बात है ये जानती हूं,
परन्तु तुम मेरे अपने हो, गर्व कैसे ना करूं।

तू जो मिला तो सोचा, सफर आसां हो जाएगा,
हुआ यूं कि और भी उलझ कर रह गए।

न जाने क्यों रखें हैं, उम्मीद हम उनसे,
जिनसे कोई उम्मीद बाकी नहीं।

घर दीवारों से सट गया,
जब से परिवार बढ़ गया।

बेरूखी देखूं तेरी तरफ से, कोई हैरानी नहीं,

ऐसे लम्हों की उम्मीद तो, हर वक़्त रहती है।

इंसानियत का भी कुछ तकाजा तो होता है,
हमने निभाया तो क्या समझ बैठे लोग।

ओह ! तेरी आंख क्यों नम हो गई सुनकर मुझे,
क्या तेरी दासतां भी मुझसे मिलती है।

प्यार की सौगातें देखो हमको इतनी मिली,
कि आहें, आंसू, गम–हमसे उठाए ना गए।

प्यार का मत करो तुम प्रदर्शन,
जैसे शीशी खोली इत्र तो उड़ जाएगा।

ढल रही है शाम, रात होने को है,
तुम अगर साथ दो, रात को रोक दूं।

हादसों ने हमें कहीं का न छोड़ा,
हर खुशी ने ही, हमसे है मुंह मोड़ा।

तुम कितना ही मुझे गिराते रहो,
हम लड़ाई अन्त तक लड़ते रहेंगे।

दिल की हालत बदल जाती है तेरे आने पर,
फिर वही हाल हो जाता है तेरे जाने पर।

आने का वादा तो वह कर जाता है,
पर न आने का अक्सर बहाना बनाया उसने।

अब मान्यताएं बदल गई, कहां जा रहे हैं लोग,
शरीफ शब्द का अर्थ, अब कमज़ोर लगा रहे हैं लोग।

अब शहर में घुटन बहुत हो गई,
सांस लेने को भी तरसने लगे हैं लोग।

जो नहीं जानते थे मेरे अस्तित्व को भी,
वो अब मेरे हर पल का हिसाब रखते हैं।

नहीं कटता एक पल भी प्रतीक्षा में,
आंखें बिछाए हैं हम तो द्वार पे।

तुम रहो ना रहो मेरे पास में,
जिंदगी मगर कट रही है आस में।

वादे धरे रह जाते हैं,
जब इंसान बदल जाते हैं।

सब कुछ जान बूझ कर भी, हम धोखा खा जाते हैं,
दुखी मन की बात साथी, कहकर भी पछताते हैं।

पाप पुण्य की परिभाषा, समझ कुछ आती नहीं,
कर लिया मंथन बहुत, निष्कर्ष कुछ पाती नहीं।

प्यार लेना देना है फितरत हमारी,
दुनिया को लेकिन यह भी न भाया।

भरे मयखाने में भी, अकेले से लगते हैं,
गिला तुमसे ही है जो हम बेगाने से लगते हैं।

पूछा जो हाल एक वृद्ध का किसी ने,
तो बोला दर्द एक जगह हो तो बताऊं।

दुनिया की देखले रंगीनियां, जीवन है जा रहा।
जीवन अगर रह भी जाय, तो यौवन है फिर कहां ?

हमदर्दी को वासना समझ लेते हैं लोग,
क्या कहें हम, क्या–क्या समझ लेते हैं लोग।

तन्हा रह कर भी हम तन्हा नहीं रहते,
तेरे ख़्यालों से कभी जुदा नहीं रहते।

उनके हर शब्द में कड़वाहट घुली है,
अमृत की चाह में ज़हर पी रहे हैं हम।

हर किसी से तो दिल भी लगाया नहीं जाता,
यह दिल का मुआमला है हमें इल्जाम न दो।

वो बरबाद करने की चाल चलते रहे,
हम जीने की कोशिश में सम्भलते रहे।

✓ दुख दर्द में जो भी किसी के शामिल नहीं होता, 27
बस सोच लो कि सीने में उसके दिल नहीं होता।

नारी वादा नहीं करती,
सब कुछ न्यौछावर कर देती है।

दिल का हुआ ख़ून तो काग़ज पे बह गया,
सह सका जो ना दर्द तो आख़िर को कह गया।

मित्रता को भी वासना समझ लेते हैं लोग,
क्या कहें क्या–क्या समझ लेते हैं लोग।

परिचय

नाम – चन्दन बाला जैन
दादा जी का नाम – स्वर्गीय न्यामत सिंह जैन
पिता जी का नाम – स्वर्गीय राज कुमार जैन
माता जी का नाम – स्वर्गीय राम दुलारी
पति का नाम – श्री जयकुमार जैन रिटायर्ड बी.डी.ओ.
जन्म तिथि – 3.10.1931
जन्म स्थान – हिसार (हरियाणा)
शिक्षा – एफ.ए. प्रभाकर
प्रकाशित पुस्तक – 'विश्व दर्पण', सामान्य ज्ञान सम्बन्धी, पंजाब सरकार से मान्यता प्राप्त। तीन संस्करण प्रकाशित (1960, 1966, 1967)

पत्रिकाएं जिनमें रचनाएं प्रकाशित हुई

दैनिक ट्रिब्यून, हरिगंधा, पंजाब सौरभ, प्रज्ञा साहित्य, दलित अस्मिता, काव्य गंगा, आभा, पंजाबी संस्कृति, दिगम्बर महा समिति पत्रिका, अहिंसा परम शस्त्र, अग्रोहा धाम, अणुव्रत भावना, प्रेम वर्षा, जैन संगम टाइम्स, रूप रेखा।

जिनमें भाग लिया – नभछोर, पाठकपक्ष, तीसरा पहर, चौपाल, हिसार संदेश आदि।
– "छटा विश्व हिन्दी सम्मेलन" लन्दन (इंग्लैण्ड) 1999, "हिन्दी साहित्य सम्मेलन" प्रयाग, सोलन (शिमला) देहरादून, गोवा, "अखिल भारतीय साहित्य परिषद्" का राष्ट्रीय सम्मेलन, सोनीपत, "अणुव्रत लेखक सम्मेलन" जयपुर, "कुमायूं संस्कृति परिषद" कोसानी, "अखिल भारतीय कवयित्री सम्मेलन" दिल्ली। लगभग 3 वर्ष तक सिटी चैनल पर काव्य गोष्ठियों का संयोजन किया। रेडक्रास हास्पिटल वैलफेयर सोसाइटी की सदस्या। आकाशवाणी के रोहतक और हिसार केन्द्रों से काव्य पाठ।

सम्मान – अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य परिषद हिसार द्वारा साहित्य तथा समाज सेवा के उपलक्ष्य में सम्मानित 30.5.1999। भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा "डॉ. अम्बेडकर फेलोशिप सम्मान" श्री माता प्रसाद गवर्नर–अरूणाचल प्रदेश के कर कमलों द्वारा तालकटोरा दिल्ली में प्राप्त।

विदेश यात्राएं – इंग्लैण्ड, हालैण्ड, बैल्जियम, जर्मनी, स्विट्जरलैण्ड, फ्रांस, मारिशिस, नेपाल आदि की यात्राएं कीं।

सम्पर्क – चन्दनबाला जैन, 1661, ज्योतिपुरा, निकट रेलवे स्टेशन, हिसार (हरियाणा) पिन 125001 दूरभाष : 01662–34021

--**--**--

मानव जीवन एक वीणा है इसे बजाते रहना,
हर दिन मीठे, नये स्वरों से इसे सजाते रहना ।